# B.A. Hons. (Temple Culture & Management)

# अधिगमपरिणाम-आधारितपाठ्यचर्यारूपरेखा
# स्नातककार्यक्रमः – मन्दिरस्य संस्कृतिः प्रबन्धनञ्च
# 2025

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये
UGC

विश्वविद्यालय-अनुदान-आयोगः
बहादुरशाह-जफर-मार्गः
नवदेहली – 110002

## UGC LOCF Committee (Sanskrit)

**Prof. Shrinivasa Varakhedi**
Chairperson of the committee and Vice-Chancellor, Central Sanskrit University, New Delhi – 110058, ✉ vc@sanskrit.nic.in
**Prof. Sukant Kumar Senapati**
Vice-Chancellor, Shri Somnath Sanskrit University, Veraval, ✉ sukantsnpt@gmail.com
**Prof. Viroopaksha V. Jaddipal**
Secretary, Maharishi Sandipani Rashtriya Ved Vidya Pratishthan, Ujjain,
✉ vvjaddipal@gmail.com
**Dr. M. V. Natesan**
(Retd Prof.) SSV Kaladi, Kailash Nagar Kolazhy, Biyur, Trichur-10,
✉ natesanskt2000@gmail.com
**Dr. Mamta Tripathi**
Assistant Professor, Gargi College, University of Delhi, Delhi, ✉ mamtatripathi.jnu@gmail.com

## Curriculum Development Committee for B.A. Hons. (Temple Culture & Management)

**Prof. Deviprasad Tripathi**
Chairperson of the Committee and Professor, Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University, New Delhi ✉ devi@slbsrsv.ac.in
**Dr. Pankaj Kumar S Rawal**
Associate Professor, Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University, New Delhi
✉ Pankaj.yatkrupa@gmail.com
**Dr. Shubham Sharma**
Asst. Professor, Department of Jyotirvigyan, Maharshi Panini Sanskrit Evam Vedic Vishwavidyalaya, Ujjain ✉ mpdrshubham@gmail.com
**Dr. PTG Ranga Ramanujacharyulu**
Asst. Professor, National Sanskrit Univursity, Tirupati, Andhra Pradesh - 517507,
✉ rracharya76@gmail.com
**Prof. Dinakar Marathe**
Convenor of the committee and Professor, Kavikulguru Kalidas Sanskrit University, Ratnagiri Campus, Ratnagiri, Maharashtra – 415612 ✉ dinakarmarathe@gmail.com

## Co-ordination Committee

**Dr. G. Surya Prasad**
Chief Co-ordinator of the committee and Asst. Professor, Central Sanskrit University, New Delhi – 110058, ✉ dr.gsurya.prasad@csu.co.in
**Dr. Yashvant Kumar Trivedi**
Asst. Professor, Central Sanskrit University, New Delhi - 110058, ✉ dr.yashvant.trivedi@csu.co.in
**Dr. Awasthi Sailesh Kumar**
Asst. Professor Grade, Central Sanskrit University, New Delhi - 110058, ✉ dr.awasthisailesh@csu.co.in
**Dr. Kishor Kumar**
Asst. Professor Grade, Central Sanskrit University, New Delhi – 110058, ✉ dr.kishor_kumar@csu.co.in
**Dr. Deepika Dixit**
Asst. Professor Grade, Central Sanskrit University, New Delhi – 110058, ✉ dr.deepikadixit@csu.co.in

# विषयसूची

# कार्यक्रमस्य परिचयः

## (Introduction of the Program)

बी.ए.आनर्स् (मन्दिरस्य संस्कृतिः प्रबन्धनञ्च) चतुर्णां वर्षाणां कार्यक्रमः विद्यते। अस्मिन् कार्यक्रमे आहत्य अष्टसत्रार्धानि भविष्यन्ति।

**अर्हता** - प्राक्-शास्त्री, उपशास्त्री, उत्तरमध्यमा इति परीक्षोत्तीर्णाः तत्समकक्ष्यापरीक्षोत्तीर्णाः छात्राः एन्.टि.ए. द्वारा आयोज्यमानपरीक्षामाध्यमेन उत्तीर्य अस्मिन् बी.ए.आनर्स् (मन्दिरसंस्कृतिः प्रबन्धनञ्च) कार्यक्रमे प्रवेष्टुम् अर्हाः। अत्र अष्टसु सत्रार्धेषु स्वशास्त्रीयविषयाः **(Major),** स्वशास्त्रसम्बद्धचयनितविषयाः **(Minor),** बहुशास्त्रीयविषयाः **(Multi-disciplinary),** नैतिकमूल्याधारितपाठ्यक्रमाः **(VAC),** कौशलाधारितपाठ्यक्रमाः (**SEC**) च भविष्यन्ति।

एतैः साकं अन्तिमसत्रार्धे प्रशिक्षुतासेवा **(Internship)** पाठ्येतरगतिविधयः **(ECA)** लघुशोधप्रबन्धः (Dissertation) च भविष्यन्ति।

# कार्यक्रमस्य उद्देश्यानि

## (Objectives of the Program)

1. भारतीयज्ञानपरम्पराधारेण मन्दिरसंस्कृतेः परिचयप्रदानम्।
2. भारतीयसंस्कृतेः विषये ज्ञानप्रदानम्।
3. मन्दिरस्थापत्यपरम्परायाः परिचयप्रदानम्।
4. मन्दिरप्रबन्धनविषये ज्ञानप्रदानम्।
5. अर्चनापद्धतेः लोकन्यासव्यवस्थायाश्च विषये मार्गदर्शनम्।
6. पूजाविधि-सङ्गीत-चित्रकलादिकौशलविकासाय मार्गदर्शनम्।
7. धार्मिकसंस्काराणां नैतिकमूल्यानाञ्च लोके प्रचारः।
8. संस्कृत-आङ्ग्ल-हिन्दीभाषासु सम्भाषणकौशलसम्पादनम्।
9. भारतीयज्ञानपरम्पराविषयेषु शोधदृष्टिप्रदानम्।
10. सङ्गणकद्वारा संस्कृत/शास्त्रसम्बद्धप्रोग्रामिंग् निर्माणे दक्षताप्रदानम्।

## कार्यक्रमस्य परिणामाः
## (Outcomes of the Program)

| | |
|---|---|
| कार्यक्रमस्य परिणामः – 1 | **भारतीयमूलानि -** छात्राणां भारतीयां संस्कृतिं प्रति आस्थावृद्धिर्भविष्यति। मन्दिराणां महत्त्वं तथा मूर्तिपूजायाः महिमानं ज्ञास्यन्ति। मन्दिराणां सामाजिकं योगदानं सनातनपरम्परां च ज्ञास्यन्ति । |
| कार्यक्रमस्य परिणामः – 2 | **भारतीयज्ञानपरम्परा** – छात्राः भारतीयज्ञानपरम्परायाम् अभिमानवन्तः भविष्यन्ति। शास्त्राणां यथार्थस्वरूपं ज्ञात्वा पुरुषार्थचतुष्टयं ज्ञास्यन्ति। भारतीयशिल्पस्थापत्यकलायाः परिचयं प्राप्स्यन्ति। कथाप्रवचनपरम्परया भारतीयाध्यात्मिकमूल्यानि ज्ञास्यन्ति। मूर्तेः तत्प्रकारान् कस्याः मूर्तेः किं च महत्त्वं पूजया च किं फलं तज्ज्ञास्यन्ति। |
| कार्यक्रमस्य परिणामः – 3 | **भविष्यवाद्युपागमः** - छात्राः जीवदयां विज्ञाय परस्परसौहार्द्रतां धारयिष्यन्ति। तीर्थयात्रया दानेन अर्थतन्त्रं च संक्रमितं भविष्यति। आबाल्यात् संस्काराणां सेचनं भविष्यति। |
| कार्यक्रमस्य परिणामः – 4 | **बहुशास्त्रीयम् -** छात्राः वेदोक्तकर्मकाण्डस्य महत्त्वं वैज्ञानिकत्वं वेत्स्यन्ति। मन्दिरसंस्कृत्या गीतनृत्यवाद्यकलायाः व्यापृतिर्भविष्यति। मन्दिरसंस्कृत्या विविधशास्त्राणां विषयान् ज्ञास्यन्ति। भारतीयव्रतपर्वोत्सवमहोत्सवान् तद्रहस्यानि च ज्ञास्यन्ति। भारतीयाचारविचारान् पवित्रतां च ज्ञास्यन्ति। समाजे मन्दिरस्य प्रभावं योगदानं च वेत्स्यन्ति। जलस्थलवृक्षवनस्पतिलतापत्रपुष्पफलानां मन्दिरसंस्कृतौ महत्त्वं योगदानं सदुपयोगं च ज्ञास्यन्ति। |
| कार्यक्रमस्य परिणामः – 5 | **वृत्तिप्रदानक्षमता -** मन्दिरसंस्कृतिसन्दर्भे वृत्तिपरकज्यौतिषवास्तुशास्त्रयोर्महत्त्वमनिवार्यत्वं ज्ञास्यन्ति। धार्मिकक्षेत्रेषु पर्यटकमार्गदर्शकरूपेण वृत्तिप्राप्त्यर्थं समर्थाः भविष्यन्ति । एषः कार्यक्रमः छात्राणां कृते उद्योगप्राप्तौ, उद्योगप्रारम्भाय च निमित्तं भवितुमर्हति। |

## प्रधानपाठ्यक्रमाणां कार्यक्रमपरिणामैः सह योजनम्
## PROGRAM OUTCOME MAPPING FOR MAJOR COURSES

| Course Name पाठ्यक्रमनाम | Rootedness भारतीयमूलानि | IKS भारतीय ज्ञान परम्परा | Futuristic भविष्यवादी | Employability वृत्तिप्रदानक्षमता | Value, Skill and Multidisciplinary मूल्यानि, कौशलानि एवं बहुशास्त्रीयपाठ्यक्रमः | Disciplinary Knowledge अध्ययनशाखायाः ज्ञानम् | Difficulty Level काठिन्यस्तरः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मन्दिरसंस्कृतेः इतिहासः | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ |
| भारतीयमन्दिरपरम्परा | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ |
| मन्दिरस्थापत्यम् | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ |
| मन्दिरप्रतिमाविधानम् | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ |
| प्रतिमानिर्माणविज्ञानम् | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ |
| मन्दिरनिर्माणं जीर्णोद्धारश्च | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ |
| मन्दिरप्रकाराः मण्डपसभादिविधानञ्च | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ |
| बृहद्देवालये उपमन्दिराणि | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ |
| विविधधार्मिकसम्प्रदायानां परिचयः | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ |
| अर्चनाविधानम् | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ |
| अर्चकपरिचारकाणां व्यवस्था | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ |
| ज्यौतिषशास्त्रपरिचयः | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मन्दिरेषु पर्वनिर्वाहः | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ |
| मन्दिरसम्बद्धानां पुष्करिण्याऽऽरामाणां | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ |
| मन्दिरपरिसराणां विकासप्रबन्धनम् | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ |
| पुण्यतीर्थक्षेत्रेषु मन्दिराणां परस्परसमन्वयः | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ |
| चित्रविधानम् | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ |
| धार्मिकसङ्गीतप्रबन्धनम् | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ |
| लोकन्यासव्यवस्था | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ |
| दर्शनार्थि-सौविध्य-प्रबन्धनम् | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ |
| मन्दिरव्यवस्थापने आपत्प्रबन्धनम् | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ |

# गौणानां पाठ्यक्रमाणां कार्यक्रमपरिणामैः सह योजनम्
## PROGRAM OUTCOME MAPPING FOR MINOR COURSES

| Course Name पाठ्यक्रमनाम | Rootedness भारतीयमूलानि | IKS भारतीय ज्ञान परम्परा | Futuristic भविष्यवादी | Employability वृत्तिप्रदानक्षमता | Value, Skill and Multidisciplinary मूल्यानि, कौशलानि एवं बहुशास्त्रीयपाठ्यक्रमः | Disciplinary Knowledge अध्ययनशाखायाः ज्ञानम् | Difficulty Level कठिनतायाः स्तरः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भारतीयमन्दिरपरम्परापरिचयः | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ |
| मन्दिरप्रतिमापरिचयः | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ |
| मन्दिरनिर्माणं जीर्णोद्धारविधानञ्च | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ |
| अर्चनापद्धतिपरिचयः | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ |
| मन्दिरेषु पर्वपरम्परा | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ |
| मन्दिरपरिसरविकास प्रबन्धनम् | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ |
| लोकन्यासव्यवस्थापनम् | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ |
| दर्शनार्थी-सौविध्यव्यवस्थापनम् | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ |

# मन्दिरसंस्कृतिप्रबन्धनस्नातकगुणाः

**मन्दिरसंस्कृतिप्रबन्धनपाठ्यचर्यायाः स्नातकगुणाः**

- भारतीयज्ञानपरम्परायाः संरक्षणम्
- मन्दिरसंस्कृतेः विकासः।
- स्थापत्यकलायाः विकासः।
- मन्दिरप्रबन्धनस्य दक्षता।
- युगानुकूलतया समन्वयसम्पादनपूर्वकं भारतस्य समग्रविकासे सहयोगः।
- संस्कृतस्य संस्कृतेश्च सम्पूर्णविश्वे प्रचारः प्रसारः।
- प्राचीनविषयाणाम् आधुनिकविषयैः सह समन्वयः।
- सभ्यसमाजस्य निर्माणम्।
- राष्ट्रं प्रति स्वकर्त्तव्यस्य निर्वाहः।
- भारतीयज्ञानपरम्परायां मन्दिरस्थापत्यस्य संस्कृतेः प्रबन्धनस्य च सम्यग्ज्ञापनेन कार्यक्रमोऽयं भारतस्य प्रतिष्ठां वर्धयिष्यति, भारतस्य समग्रविकासे च सहकरोति ।

## प्रधानपाठ्यक्रमाणां सञ्चयः

| क्र.सं. | | पाठ्यक्रमः | पाठ्यक्रम-श्रेयोऽङ्कः | पाठ्यक्रम-काठिन्यस्तरः |
|---|---|---|---|---|
| 1. | प्रथमवर्षीयाः प्रधानपाठ्यक्रमाः | प्रधानः 1.1: मन्दिरसंस्कृतेः इतिहासः | 4 | 100-199 |
| 2. | | प्रधानः 1.2: भारतीयमन्दिरपरम्परा | 4 | 100-199 |
| 3. | | प्रधानः 1.3: मन्दिरस्थापत्यम् | 4 | 100-199 |
| 4. | | प्रधानः 1.4: मन्दिरप्रतिमाविधानम् | 4 | 100-199 |
| 5. | | प्रधानः 1.5: प्रतिमानिर्माणविज्ञानम् | 4 | 100-199 |
| 6. | | प्रधानः 1.6: मन्दिरनिर्माणं जीर्णोद्धारश्च | 4 | 100-199 |
| 7. | | प्रधानः 1.7: मन्दिरप्रकाराः मण्डपसभादिविधानञ्च | 4 | 100-199 |
| 8. | द्वितीयवर्षीयाः प्रधानपाठ्यक्रमाः | प्रधानः 2.1: बृहद्देवालये उपमन्दिराणि | 4 | 200-299 |
| 9. | | प्रधानः 2.2: विविधधार्मिकसम्प्रदायानां परिचयः | 4 | 200-299 |
| 10. | | प्रधानः 2.3: अर्चनाविधानम् | 4 | 200-299 |
| 11. | | प्रधानः 2.4: अर्चकपरिचारकाणां व्यवस्था | 4 | 200-299 |
| 12. | | प्रधानः 2.5: ज्यौतिषशास्त्रपरिचयः | 4 | 200-299 |
| 13. | | प्रधानः 2.6: मन्दिरेषु पर्वनिर्वाहः | 4 | 200-299 |
| 14. | तृतीयवर्षीयाः प्रधानपाठ्यक्रमाः | प्रधानः 3.1: मन्दिरसम्बद्धानां पुष्करिण्याऽऽरामाणां | 4 | 300-399 |
| 15. | | प्रधानः 3.2: मन्दिरपरिसराणां विकासप्रबन्धनम् | 4 | 300-399 |
| 16. | | प्रधानः 3.3: पुण्यतीर्थक्षेत्रेषु मन्दिराणां परस्परसमन्वयः | 4 | 300-399 |
| 17. | चतुर्थवर्षीयाः प्रधानपाठ्यक्रमाः | प्रधानः 4.1: चित्रविधानम् | 4 | 400-499 |
| 18. | | प्रधानः 4.2: धार्मिकसङ्गीतप्रबन्धनम् | 4 | 400-499 |
| 19. | | प्रधानः 4.3: लोकन्यासव्यवस्था | 4 | 400-499 |
| 20. | | प्रधानः 4.4: दर्शनार्थि-सौविध्य-प्रबन्धनम् | 4 | 400-499 |
| 21. | | प्रधानः 4.5: मन्दिरव्यवस्थापने आपत्प्रबन्धनम् | 4 | 400-499 |

## गौणपाठ्यक्रमाणां सञ्चयः

| क्र.सं. | | पाठ्यक्रमः | पाठ्यक्रम-श्रेयोऽङ्कः | पाठ्यक्रम-काठिन्यस्तरः |
|---|---|---|---|---|
| 1. | द्वितीयवर्षीयाः गौणपाठ्यकमाः | गौणः 2.क.1: भारतीयमन्दिरपरम्परापरिचयः | 4 | 200-299 |
| 2. | | गौणः 2.क.2: मन्दिरप्रतिमापरिचयः | 4 | 200-299 |
| 3. | तृतीयवर्षीयाः गौणपाठ्यक्रमाः | गौणः 3.क.1: मन्दिरनिर्माणं जीर्णोद्धारविधानञ्च | 4 | 300-399 |
| 4. | | गौणः 3.क.2: अर्चनापद्धतिपरिचयः | 4 | 300-399 |
| 5. | | गौणः 3.क.3: मन्दिरेषु पर्वपरम्परा | 4 | 300-399 |
| 6. | | गौणः 3.क.4: मन्दिरपरिसरविकासप्रबन्धनम् | 4 | 300-399 |
| 7. | चतुर्थवर्षीयाः गौणपाठ्यक्रमाः | गौणः 4.क.1: लोकन्यासव्यवस्थापनम् | 4 | 400-499 |
| 8. | | गौणः 4.क.2: दर्शनार्थि-सौविध्यव्यवस्थापनम् | 4 | 400-499 |

# प्रथमवर्षः
# (प्रधानपाठ्यक्रमाः)

**काठिन्यस्तरः 100-199**

**श्रेयोऽङ्काः - 4**
**होराः - 60**

## प्रथमसत्रार्द्धः (Semester – 1)

**प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 1.1: मन्दिरसंस्कृतेः इतिहासः**

**पाठ्यक्रमस्य उद्देश्यानि (Course Objectives)**

1. भारतीयमन्दिरसंस्कृतेः ऐतिहासिकपरिचयप्रदानम्।
2. भारतीयज्ञानपरम्परायां मन्दिरसंस्कृतेः अवगमनम्।
3. भारतीयधार्मिकाध्यात्मिकपरम्परायां मन्दिराणां स्थानम्।
4. शास्त्रेषु मन्दिराणामुल्लेखनं सन्दर्भप्रदानञ्च।

**अधिगमस्य परिणामाः (Learning Outcomes):** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः :-

1. मन्दिरसंस्कृतेः इतिहासं व्याख्यातुं समर्थाः भविष्यन्ति।
2. भारतीयमन्दिरसंस्कृतिमवगमिष्यन्ति।
3. मन्दिराणां सन्दर्शनहेतोः भारतीयधार्मिकाध्यात्मिकज्ञानेन प्रवर्तननियमानवगमिष्यन्ति।

**श्रेयोऽङ्कप्रारूपम् (Credit Framework)**

| पाठ्यक्रमकूटाङ्कः (Course Code) | पाठ्यक्रमशीर्षकम् (Course Title) | पाठ्यक्रमस्य श्रेयोऽङ्कविभाजनम् (Credit Distribution of the Course) | | | श्रेयोऽङ्काः (Credits) |
|---|---|---|---|---|---|
| | | व्याख्यानम् (Lecture) | अनुशिक्षणम् (Tutorial) | प्रशिक्षणम्/अभ्यासः (Practical/Practice) | |
| **प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 1.1** | मन्दिरसंस्कृतेः इतिहासः | **04** | **0** | **0** | **04** |

**पाठ्यक्रमविवरणम् (Details of Course)**

**अन्वितिः १. मन्दिरसंस्कृतेः अवधारणा विकासश्च।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- मन्दिरस्य परिभाषा।
- मन्दिरस्य देवालय-देवकुलादिपर्यायशब्दाः।
- मन्दिरस्य महत्त्वम्।
- मन्दिरस्य वातावरणम्।
- मन्दिरसंस्कृतेः परिचयः।

- मन्दिरसंस्कृतेः विकासक्रमः।

**अन्वितिः २. वैदिकार्चावास्तोः ऐतिहासिकपरिचयः।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- वैदिककाले धार्मिकं वास्तु।
- वेदी-चिति-यज्ञशालादीनां परिचयः निर्माणनियमाश्च।
- वैदिकार्चावास्तुनि मन्दिरविकाससूत्राणि।

**अन्वितिः ३. मन्दिरस्य पौराणिकसन्दर्भाः।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- मत्स्य-अग्नि-पद्म-स्कन्दपुराणादिषु मन्दिरप्रस्तावः।
- मन्दिरसम्बद्धपौराणिकविषयाणां महत्त्वम्।
- संस्कृतवाङ्मये मन्दिरस्य प्राच्यप्रमाणं वास्तुविन्यासश्च।
- अर्थशास्त्र-प्रतिमानाटकादिप्राच्यग्रन्थेषु मन्दिरस्य प्रमाणम्।

**अन्वितिः ४. लोके मन्दिराणां ऐतिहासिकीपरम्परा।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- वास्तुग्रन्थेषु चैत्यादिलौकिकधर्मस्थलानामुल्लेखः।
- वनवासीपरम्परायां धार्मिकं वास्तु।
- लोकदेवतापरम्परा देवस्थानञ्च।
- गृहेषु देवस्थानपरम्परा।
- लोककथानकेषु मन्दिरसंस्कृतेः ऐतिहासिकसन्दर्भाः।

**निर्धारिताः ग्रन्थाः (Essential/Recommended Readings/Texts)**

1. विद्याधर, डॉ., *भारतीय वास्तुशास्त्र का इतिहास*, नई दिल्ली, ईस्टर्न बुक लिंकर्स।
2. सहाय, सच्चिदानन्द, *मन्दिर स्थापत्य का इतिहास*, पटना, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
3. गैरोला, वाचस्पति, *अर्थशास्त्र (टीका)*, वाराणसी, चौखम्बा प्रकाशन।

**सहायकाः ग्रन्थाः (Additional Readings)**

1. उपाध्याय, वासुदेव, डॉ., *प्राचीन भारतीय स्तूप गुहा एवं मंदिर*, पटना, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2008।
2. जुगनू, श्रीकृष्ण, डॉ., *देवालय चन्द्रिका*, दिल्ली, परिमल पब्लिकेशंस, 2015।
3. सूर्यकान्त, डॉ., *वैदिक देवशास्त्र*, नई दिल्ली, मेहरचन्द लछमनदास पब्लिकेशंस, 2006।

| काठिन्यस्तरः 100-199 | श्रेयोऽङ्काः - 4 होराः - 60 |
|---|---|

**प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 1.2: भारतीयमन्दिरपरम्परा**

**पाठ्यक्रमस्य उद्देश्यानि (Course Objectives)**

1. भारतीयमन्दिरसंस्कृतेः सामान्यपरिचयप्रदानम्।
2. भारतीयज्ञानपरम्परायां मन्दिरसंस्कृतेः अवगमनम्।
3. भारतीयधार्मिकाध्यात्मिकपरम्परायां मन्दिराणां स्थानम्।
4. शास्त्रेषु मन्दिराणामुल्लेखनं सन्दर्भप्रदानञ्च।

**अधिगमस्य परिणामाः (Learning Outcomes):** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः :-

1. मन्दिराणामवधारणां सम्यक्तया वर्णयितुं शक्ष्यन्ति।
2. वेदी-चिति-यज्ञशालादीनां परिचयं निर्माणनियमांश्च वक्तुं सिद्धाः भविष्यन्ति।
3. मन्दिरस्य पौराणिकसन्दर्भान् व्याख्यातुं समर्थाः भविष्यन्ति।
4. मन्दिराणां समाजे कः प्रभावः इति विश्लेषणं कर्तुं समर्थाः भविष्यन्ति।

**श्रेयोऽङ्कप्रारूपम् (Credit Framework)**

| पाठ्यक्रमकूटाङ्कः (Course Code) | पाठ्यक्रमशीर्षकम् (Course Title) | पाठ्यक्रमस्य श्रेयोऽङ्कविभाजनम् (Credit Distribution of the Course) | | | श्रेयोऽङ्काः (Credits) |
|---|---|---|---|---|---|
| | | व्याख्यानम् (Lecture) | अनुशिक्षणम् (Tutorial) | प्रशिक्षणम्/अभ्यासः (Practical/Practice) | |
| **प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 1.2** | **भारतीयमन्दिरपरम्परा** | **04** | **0** | **0** | **04** |

**पाठ्यक्रमविवरणम् (Details of Course)**

**अन्वितिः १. मन्दिरस्यावधारणा।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- मन्दिरस्य परिभाषा।
- मन्दिरस्य महत्त्वम्।
- मन्दिरस्य वातावरणम्।

**अन्वितिः २. वैदिकार्चावास्तु।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- वैदिककाले धार्मिकं वास्तु।
- वेदी-चिति-यज्ञशालादीनां परिचयः निर्माणनियमाश्च।
- वैदिकार्चावास्तुनि मन्दिरविकाससूत्राणि।

**अन्वितिः ३. मन्दिरस्य पौराणिकसन्दर्भाः।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- मत्स्य-अग्नि-पद्म-स्कन्दपुराणादिषु मन्दिरप्रस्तावः।
- मन्दिरसम्बद्धपौराणिकविषयाणां महत्त्वम्।
- संस्कृतवाङ्मये मन्दिरस्य प्राच्यप्रमाणं वास्तुविन्यासश्च।

**अन्वितिः ४. जनमानसे मन्दिराणां स्थानम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- मन्दिराणां समाजे प्रभावः।
- मन्दिरैः सामाजिकपरिवर्तनम्।
- मन्दिरैः मानवेषु परस्परसद्भावः।

**निर्धारिताः ग्रन्थाः (Essential/Recommended Readings/Texts)**

1. विद्याधर, डॉ., *भारतीय वास्तुशास्त्र का इतिहास*, नई दिल्ली : ईस्टर्न बुक लिंकर्स।
2. सहाय, सच्चिदानन्द, *मन्दिर स्थापत्य का इतिहास*, पटना : बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
3. गैरोला, वाचस्पति, *अर्थशास्त्र (टीका)*, वाराणसी : चौखम्बा प्रकाशन।

**सहायकाः ग्रन्थाः (Additional Readings)**

1. सूर्यकान्त, डॉ., (2006 )*वैदिक देवशास्त्र*, नई दिल्ली : मेहरचन्द लछमनदास पब्लिकेशंस्।
2. उपाध्याय, वासुदेव, डॉ., (2008) *प्राचीन भारतीय स्तूप गुहा एवं मंदिर*, पटना : बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
3. जुगनू, श्रीकृष्ण, डॉ., (2015) *देवालय चन्द्रिका*, दिल्ली : परिमल पब्लिकेशंस्।

| काठिन्यस्तरः 100-199 | श्रेयोऽङ्काः - 4 होराः - 60 |
|---|---|

**प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 1.3: मन्दिरस्थापत्यम्**

**पाठ्यक्रमस्य उद्देश्यानि (Course Objectives)**

1. भारतीयस्थापत्यमूर्तिकलावैभवस्य ज्ञानप्रदानम्।
2. शिल्पकलावैभवस्यावगमनम्।
3. स्थापत्यकलावैभवस्य ज्ञानप्रदानम्।
4. मन्दिरनिर्माणवैविध्यस्य ज्ञानप्रदानम्।

**अधिगमस्य परिणामाः (Learning Outcomes):** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः :-

1. देवालयस्थापत्यस्य शैल्याः परिचयं वास्तुशास्त्रीयलक्षणानि च वक्तुं शक्ष्यन्ति।
2. नागरशैल्याः वैशिष्ट्यं प्रतिपादयितुं शक्ष्यन्ति।
3. द्राविडशैल्याः वैशिष्ट्यं सोदाहरणं वर्णयिष्यन्ति।
4. वेसरशैल्याः वैशिष्ट्यम् उदाहरणानि च वक्तुं सिद्धाः भविष्यन्ति।

**श्रेयोऽङ्कप्रारूपम् (Credit Framework)**

| पाठ्यक्रमकूटाङ्कः (Course Code) | पाठ्यक्रमशीर्षकम् (Course Title) | पाठ्यक्रमस्य श्रेयोऽङ्कविभाजनम् (Credit Distribution of the Course) | | | श्रेयोऽङ्काः (Credits) |
|---|---|---|---|---|---|
| | | व्याख्यानम् (Lecture) | अनुशिक्षणम् (Tutorial) | प्रशिक्षणम्/अभ्यासः (Practical/Practice) | |
| प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 1.3 | मन्दिरस्थापत्यम् | 04 | 0 | 0 | 04 |

**पाठ्यक्रमविवरणम् (Details of Course)**

**अन्वितिः १. देवालयस्थापत्यस्य शैल्याः परिचयः वास्तुशास्त्रीयलक्षणानि च। श्रेयोऽङ्कः १**

- नागरशैली।
- द्राविडशैली।
- वेसरशैली।
- आधुनिकस्थापत्यविज्ञाने वास्तुशैल्याः लक्षणानि।

**अन्वितिः २. नागरशैल्याः वैशिष्ट्यम् उदाहरणानि च। श्रेयोऽङ्कः १**

- गुप्तशैली।
- चन्देलशैली।
- उत्कलशैली।
- परमारशैली।

- काश्मीरशैली।
- बङ्गशैली।
- सौराष्ट्रशैली।
- देलवाड़ाजैनशैली।

**अन्वितिः ३. द्राविडशैल्याः वैशिष्ट्यम् उदाहरणानि च।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- पल्लवशैली।
- चोलशैली।
- नायकशैली।
- पाण्ड्यशैली।
- विजयनगरशैली।

**अन्वितिः ४. वेसरशैल्याः वैशिष्ट्यम् उदाहरणानि च।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- चालुक्यशैली।
- राष्ट्रकूटशैली।

**निर्धारिताः ग्रन्थाः (Essential/Recommended Readings/Texts)**

1. सहाय, सच्चिदानन्द, *मन्दिर स्थापत्य का इतिहास*, पटना, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
2. उपाध्याय, उदयनारायण, प्रो., तिवारी, गौतम, प्रो., *भारतीय स्थापत्य एवं कला*, वाराणसी : मोतीलाल बनारसीदास।
3. Panda, N. C., Prof., Reddy, E. Shiva Nagi, *Temple Architecture of India*, New Delhi, Bhartiya Kala Prakashan.

**सहायकाः ग्रन्थाः (Additional Readings)**

1. उपाध्याय, वासुदेव, डॉ., *प्राचीन भारतीय स्तूप गुहा एवं मंदिर*, पटना, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2008।
2. जुगनू, श्रीकृष्ण, डॉ., *देवालय चन्द्रिका*, दिल्ली : परिमल पब्लिकेशंस, 2015।

**काठिन्यस्तरः 100-199**

**श्रेयोऽङ्काः - 4**
**होराः - 60**

**प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 1.4: मन्दिरप्रतिमाविधानम्**

**पाठ्यक्रमस्य उद्देश्यानि (Course Objectives)**

1. प्रतिमाभेदस्य ज्ञानप्रदानम्।
2. चलाचलविग्रहाणां स्वरूपस्यावगमनम्।
3. सकलनिष्कलप्रतिमानां ज्ञानप्रदानम्।
4. उत्सवमूर्तेः महिम्नः ज्ञानप्रदानम्।

**अधिगमस्य परिणामाः (Learning Outcomes):** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः :-

1. प्रतिमापरिचयं तद्भेदांश्च प्रतिपादयितुं समर्थाः भविष्यन्ति।
2. विविधलिङ्गपरिचयप्रदाने समर्थाः भविष्यन्ति।
3. शिवस्य नटराज-लकुलीश-भिक्षाटनादिप्रतिमानां वर्णने सिद्धाः भविष्यन्ति।
4. देवीप्रतिमास्वरूपं वर्णयितुं शक्ष्यन्ति।

**श्रेयोऽङ्कप्रारूपम् (Credit Framework)**

| पाठ्यक्रमकूटाङ्कः (Course Code) | पाठ्यक्रमशीर्षकम् (Course Title) | पाठ्यक्रमस्य श्रेयोऽङ्कविभाजनम् (Credit Distribution of the Course) | | | श्रेयोऽङ्काः (Credits) |
|---|---|---|---|---|---|
| | | व्याख्यानम् (Lecture) | अनुशिक्षणम् (Tutorial) | प्रशिक्षणम्/अभ्यासः (Practical/Practice) | |
| प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 1.4 | मन्दिरप्रतिमाविधानम् | 04 | 0 | 0 | 04 |

**पाठ्यक्रमविवरणम् (Details of Course)**

**अन्वितिः १. प्रतिमापरिचयः भेदाश्च।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- प्रतिमा-मूर्त्यादयः पारिभाषिकशब्दाः।
- चलाचलविग्रहाः।
- लिङ्गं बेरञ्च।
- सकलनिष्कलप्रतिमा।
- सम्पूर्ण-आवक्ष-मुखारविन्दप्रतिमा।
- उत्सवमूर्तिः।

**अन्वितिः २. विविधलिङ्गपरिचयः।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- लिङ्गसंरचना।
- जलहारिकादि अङ्गानि, मुखलिङ्गम्।
- सहस्रलिङ्गम्।
- ब्राह्मादिलिङ्गानि।
- रत्नज-दारुज-शैलजादिलिङ्गभेदाः।

**अन्वितिः ३. देवप्रतिमापरिचयः।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- शिवस्य नटराज-लकुलीश-भिक्षाटनादिप्रतिमानां परिचयः।
- विष्णोः शयनादिमुद्राः।
- राम-कृष्ण-ब्रह्मा-इन्द्रकुबेरादीनां प्रतिमाः।

**अन्वितिः ४. देवीप्रतिमापरिचयः।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- महालक्ष्मी-महाकाली-सरस्वती-महिषासुरमर्दिनी–दुर्गादेवी-पद्मावतीदेव्यादिप्रतिमानां रूपाणि।

**निर्धारिताः ग्रन्थाः (Essential/Recommended Readings/Texts)**

1. जुगनू, श्रीकृष्ण, *अपराजितपृच्छा*, दिल्ली : परिमल संस्कृत ग्रंथमाला।
2. पाण्डेय, शैलजा (टीकाकार), *मयमत*, वाराणसी : चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन।
3. डेगेंस, ब्रूनो (टीकाकार), *मयमत*, वाराणसी : मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन।

**सहायकाः ग्रन्थाः (Additional Readings)**

1. जुगनू, श्रीकृष्ण, डॉ. (सम्पादन), *देवतामूर्तिप्रकरण*, नई दिल्ली : न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन।
2. सिन्हा, कमलेश, श्रीमती, चन्द्र, दिनेश, डॉ., (1990), *भारतीय प्रतिमा विज्ञान*, नई दिल्ली : अयन प्रकाशन।
3. सूर्यकान्त, डॉ., (2006) *वैदिक देवशास्त्र*, नई दिल्ली : मेहरचन्द लछमनदास पब्लिकेशंस।

**काठिन्यस्तरः 100-199**

**श्रेयोऽङ्काः - 4**
**होराः - 60**

## द्वितीयसत्रार्द्धः (Semester – 2)

**प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 1.5: प्रतिमानिर्माणविज्ञानम्**

**पाठ्यक्रमस्य उद्देश्यानि (Course Objectives)**

1. पार्थिवादिप्रतिमानिर्माणपदार्थानां ज्ञानप्रदानम्।
2. दारुजप्रतिमायाः विज्ञानप्रदानम्।
3. शैलजप्रतिमायाः परिज्ञानप्रदानम्।
4. धातुज-रत्नजयोः प्रतिज्ञाविज्ञानप्रदानम्।

**अधिगमस्य परिणामाः (Learning Outcomes):** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः :-

1. मन्दिरस्थानां विभिन्नविग्रहाणां निर्माणावसरे पार्थिवादिप्रतिमानिर्माणपदार्थानां स्वरूपं वर्णयिष्यन्ति।
2. दारुजप्रतिमावैशिष्ट्यं प्रतिपादयिष्यन्ति।
3. शिलया निर्मितविग्रहाणां स्वरूपं वर्णयिष्यन्ति।
4. धातु-रत्नादिना निर्मितविभिन्नप्रतिमानां निर्माणशैलीव्याख्यास्यन्ति।

**श्रेयोऽङ्कप्रारूपम् (Credit Framework)**

| पाठ्यक्रमकूटाङ्कः (Course Code) | पाठ्यक्रमशीर्षकम् (Course Title) | पाठ्यक्रमस्य श्रेयोऽङ्कविभाजनम् (Credit Distribution of the Course) | | | श्रेयोऽङ्काः (Credits) |
|---|---|---|---|---|---|
| | | व्याख्यानम् (Lecture) | अनुशिक्षणम् (Tutorial) | प्रशिक्षणम्/अभ्यासः (Practical/Practice) | |
| प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 1.5 | प्रतिमानिर्माणविज्ञानम् | 04 | 0 | 0 | 04 |

**पाठ्यक्रमविवरणम् (Details of Course)**

**अन्वितिः १. प्रतिमापदार्थपरिचयः।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- पार्थिवप्रतिमानिर्माणविज्ञानम्।
- दारुजप्रतिमानिर्माणविज्ञानम्।
- शैलजप्रतिमानिर्माणविज्ञानम्।
- धातुजप्रतिमानिर्माणविज्ञानम्।
- रत्नजादिप्रतिमानिर्माणविज्ञानम्।

**अन्वितिः २. दारुजप्रतिमाविज्ञानम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- वृक्षचयनं - ग्राह्याग्राह्यकाष्ठम्।
- पुंस्त्र्यादिवृक्षभेदाः।
- सारदार्वादिवृक्षभेदाः।
- काष्ठगुणवत्ता वृक्षच्छेदनम्।
- काष्ठानयनम्।
- तक्षणकर्म-वर्णकर्मादयः।
- सुरक्षोपायाः।

**अन्वितिः ३. शैलजप्रतिमाविज्ञानम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- शिलाचयनम्।
- ग्राह्याग्राह्यशिलाः।
- पुंस्त्र्यादिशिलाभेदाः।
- शिलानयनम्।
- तक्षणकर्म।
- लक्षणोद्धारः।

**अन्वितिः ४. धातुज-रत्नज-पार्थिवादिप्रतिमाविज्ञानम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- अष्टविधधातवः।
- स्वर्णादिप्रतिमानिर्माणविधयः।
- रत्नजप्रतिमालक्षणं पारदलिङ्गविधानञ्च।
- पार्थिवप्रतिमाविज्ञानम्।
- मृत्तिकाचयनम्।
- शुभाशुभमृत्तिका।
- पक्वापक्व-मृण्मूर्तयः।
- पुष्पादीनां प्रतिमानिर्माणम्।

- हिमप्रतिमा।
- आधुनिकप्रतिमापदार्थाः।

**निर्धारिताः ग्रन्थाः (Essential/Recommended Readings/Texts)**


1. जुगनू, श्रीकृष्ण, *अपराजितपृच्छा*, दिल्ली : परिमल संस्कृत ग्रंथमाला।
2. पाण्डेय, शैलजा (टीकाकार), *मयमत*, वाराणसी : चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन।
3. डेगेंस, ब्रूनो (टीकाकार), *मयमत*, वाराणसी : मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन।


**सहायकाः ग्रन्थाः (Additional Readings)**


1. जुगनू, श्रीकृष्ण, डॉ. (सम्पादन), *देवतामूर्तिप्रकरण*, नई दिल्ली : न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन।
2. पाण्डेय, सुरेन्द्र कुमार, डॉ., *रत्न विमर्श*, इलाहाबाद, साहित्य संगम।
3. सिन्हा, कमलेश, श्रीमती, चन्द्र, दिनेश, डॉ., (1990), *भारतीय प्रतिमा विज्ञान*, नई दिल्ली : अयन प्रकाशन।
4. सूर्यकान्त, डॉ., *वैदिक देवशास्त्र*, नई दिल्ली : मेहरचन्द लछमनदास पब्लिकेशंस।
5. जुगनू, श्रीकृष्ण, डॉ. (सम्पादन), 2005, *वास्तु एवं शिलाचयन*, नई दिल्ली : न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन।

| काठिन्यस्तरः 100-199 | श्रेयोऽङ्काः - 4 होराः - 60 |
|---|---|

**प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 1.6: मन्दिरनिर्माणं जीर्णोद्धारश्च**

**पाठ्यक्रमस्य उद्देश्यानि (Course Objectives)**

1. भूमेः चयनस्य ज्ञानप्रदानम्।
2. मन्दिरनिर्माणारम्भप्रक्रियायाः ज्ञानप्रदानम्।
3. प्रतिष्ठाविधानस्यावगमनम्।
4. जीर्णोद्धारविधानस्य ज्ञानप्रदानम्।

**अधिगमस्य परिणामाः (Learning Outcomes):** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः :-

1. मन्दिरनिर्माणावसरे योग्यभूमेः आवश्यकतां, भूमेः भेदांश्च वर्णयितुं शक्ष्यन्ति।
2. देवालयारम्भमुहूर्तः, शिलान्यासविधिः इत्यादिविषयान् सुष्ठु प्रतिपादयिष्यन्ति।
3. प्रतिष्ठानिर्वचनं, प्रतिष्ठागतानां च नैकविषयाणां विश्लेषणं करिष्यन्ति।
4. जीर्णोद्धारशब्दार्थं, मन्दिरे विभिन्नजीर्णद्रव्याणां च स्वरूपं निरूपयिष्यन्ति।

**श्रेयोऽङ्कप्रारूपम् (Credit Framework)**

| पाठ्यक्रमकूटाङ्कः (Course Code) | पाठ्यक्रमशीर्षकम् (Course Title) | पाठ्यक्रमस्य श्रेयोऽङ्कविभाजनम् (Credit Distribution of the Course) | | | श्रेयोऽङ्काः (Credits) |
|---|---|---|---|---|---|
| | | व्याख्यानम् (Lecture) | अनुशिक्षणम् (Tutorial) | प्रशिक्षणम्/अभ्यासः (Practical/Practice) | |
| प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 1.6 | मन्दिरनिर्माणं जीर्णोद्धारश्च | 04 | 0 | 0 | 04 |

**पाठ्यक्रमविवरणम् (Details of Course)**

**अन्वितिः १. भूमिचयनम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- देवालयार्थं प्रशस्तभूमिः।
- भूमिचयनस्य वास्तुशास्त्रीयविधयः।
- ग्रामनगरादिषु देवालयस्थानम्।

**अन्वितिः २. देवालयारम्भः निर्माणञ्च।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- देवालयारम्भमुहूर्तः।
- शिलान्यासविधिः।
- गर्भविन्यासः।
- शल्योद्धारः।

- प्रस्तरदेवालयः।
- गर्भगृहं मण्डपञ्च।
- गोपुरविधानम्।
- इष्टिकालक्षणम्।
- गुहास्थापत्यम्।

**अन्वितिः ३. प्रतिष्ठाविधानम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- प्रतिमास्थापनम्।
- प्रतिष्ठामुहूर्तः।
- प्रतिष्ठाविधिः।

**अन्वितिः ४. जीर्णोद्धारविधानम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- अनुकर्मपरिचयः।
- बालालयस्थापनम्।
- धातुजप्रतिमाजीर्णोद्धारः।
- प्रतिमास्थानपरिवर्तने विधिनिषेधः।

**निर्धारिताः ग्रन्थाः (Essential/Recommended Readings/Texts)**


1. पाठक, गणेशदत्त (टीकाकार), *विश्वकर्माप्रकाश*, वाराणसी : श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार।
2. *प्रतिष्ठाविधिदर्शनः*, तिरुपतिः : श्रीवेङ्कटेश्वरवेदविश्वविद्यालयः।
3. पाण्डेय, शैलजा (टीकाकार), *मयमत*, वाराणसी : चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन।
4. डेगेंस, ब्रूनो (टीकाकार), *मयमत*, वाराणसी : मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन।


**सहायकाः ग्रन्थाः (Additional Readings)**


1. द्विवेदी, रामनिहोर, श्री, *बृहद्वास्तुमाला*, वाराणसी : चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला।
2. जुगनू, श्रीकृष्ण, डॉ. (सम्पादन), *देवतामूर्तिप्रकरण*, नई दिल्ली : न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन।
3. रघुनाथाचार्युलु, एस. बी., *क्रियाकैरवचन्द्रिका*, तिरुपतिः : पद्मश्री पब्लिसर्श।
4. जुगनू, श्रीकृष्ण, डॉ. (सम्पादन), (2005), *वास्तु एवं शिलाचयन*, नई दिल्ली : न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन।

| काठिन्यस्तरः 100-199 | श्रेयोऽङ्काः - 4 होराः - 60 |
|---|---|

**प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 1.7: मन्दिरप्रकाराः मण्डपसभादिविधानञ्च**

**पाठ्यक्रमस्य उद्देश्यानि (Course Objectives)**

1. देवालयानामङ्गानां ज्ञानप्रदानम्।
2. देवालयभेदानां ज्ञानप्रदानम्।
3. मण्डपविधानस्य परिज्ञानम्।
4. शालाविधानस्य सभाविधानस्य च ज्ञानप्रदानम्।

**अधिगमस्य परिणामाः (Learning Outcomes):** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः :-

1. देवालयानां विविधाङ्गानां वर्णनं कर्तुं समर्थाः भविष्यन्ति।
2. मण्डपलक्षणप्रयोजनादिकं वक्तुं शक्ष्यन्ति।
3. एकशालादिवास्तुभेदाः, सोपानभेदाः इत्यादिविचारान् प्रतिपादयिष्यन्ति।
4. न्यायसभादिषु देवस्वरूपम् इत्यादि विषयवर्णने समर्थाः भविष्यन्ति।

**श्रेयोऽङ्कप्रारूपम् (Credit Framework)**

| पाठ्यक्रमकूटाङ्कः (Course Code) | पाठ्यक्रमशीर्षकम् (Course Title) | पाठ्यक्रमस्य श्रेयोऽङ्कविभाजनम् (Credit Distribution of the Course) | | | श्रेयोऽङ्काः (Credits) |
|---|---|---|---|---|---|
| | | व्याख्यानम् (Lecture) | अनुशिक्षणम् (Tutorial) | प्रशिक्षणम्/अभ्यासः (Practical/Practice) | |
| प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 1.7 | मन्दिरप्रकाराः मण्डपसभादिविधा | 04 | 0 | 0 | 04 |

**पाठ्यक्रमविवरणम् (Details of Course)**

**अन्वितिः १. देवालयभेदाः अङ्गानि च।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- मेरु-मन्दरादिभेदानां लक्षणम्।
- भूमि-छन्द-कपोतपाली-शुकनासादि-अङ्गानां परिचयः।

**अन्वितिः २. मण्डपविधानम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- मण्डपप्रयोजनम्।
- मण्डपलक्षणम्।
- प्रपा-रङ्गमण्डप-जलक्रीडामण्डप-सर्वतोभद्र-यज्ञमण्डपादिविविधमण्डपप्रकाराः।
- महामण्डपार्द्धमण्डपादिभेदाः।

**अन्वितिः ३. शालाविधानम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- एकशालादिवास्तुभेदाः, सोपानभेदाः।
- भिन्नाभिन्नगृहम्, अलिन्दः मूषा च।
- शिखरविधानम्।
- नागरशिखरे कलश-आमलकादीनि अङ्गानि।
- द्राविडशिखरे स्तूपिकादीनि अङ्गानि।

**अन्वितिः ४. सभाविधानम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- प्राचीनसभाभेदाः।
- न्यायसभादिषु देवस्वरूपम्।
- सिंहासनलक्षणम्।
- सभागारस्य वर्तमाननिर्माणयोजनाः।

**निर्धारिताः ग्रन्थाः (Essential/Recommended Readings/Texts)**


1. जुगनू, श्रीकृष्ण, *विश्वकर्मवास्तुशास्त्र*, दिल्ली : परिमल संस्कृत ग्रन्थमाला।
2. पाण्डेय, शैलजा (टीकाकार), *मयमत*, वाराणसी : चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन।
3. झा, अच्युतानन्द (टीकाकार), *बृहत्संहिता* (वराहमिहिर), वाराणसी : चौखम्बा प्रकाशन।


**सहायकाः ग्रन्थाः (Additional Readings)**


1. Panda, N. C., Prof., Reddy, E. Shiva Nagi, *Temple Architecture of India*, New Delhi : B0hartiya Kala Prakashan.
2. उपाध्याय, वासुदेव, डॉ., (2008), *प्राचीन भारतीय स्तूप गुहा एवं मंदिर*, पटना : बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
3. जुगनू, श्रीकृष्ण, डॉ., (2015), *देवालय चन्द्रिका*, दिल्ली : परिमल पब्लिकेशंस।

# द्वितीयवर्षः
# (प्रधानपाठ्यक्रमाः)

**काठिन्यस्तरः 200-299**

**श्रेयोऽङ्काः - 4**
**होराः - 60**

# तृतीयसत्रार्द्धः (Semester – 3)

**प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 2.1: बृहद्देवालये उपमन्दिराणि**

**पाठ्यक्रमस्य उद्देश्यानि (Course Objectives)**

1. बृहद्देवालयस्य ज्ञानप्रदानम्।
2. पञ्चायतनदेवानां परिज्ञानम्।
3. देवालये स्थितानाम् उपमन्दिराणां ज्ञानप्रदानम्।
4. उपमन्दिराणां विवरणस्य ज्ञानप्रदानम्।

**अधिगमस्य परिणामाः (Learning Outcomes):** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः :-

1. देवतापरिवारपरिचयं वर्णयिष्यन्ति।
2. पञ्चायतनानां विवरणं वक्तुं शक्ष्यन्ति।
3. भक्त-बेरलक्षणं, गरुडस्तम्भः इत्यादिविषयान् प्रतिपादयिष्यन्ति।
4. देवालयपरिसरे उपमन्दिरव्यवस्थां वर्णयितुं शक्ष्यन्ति।

**श्रेयोऽङ्कप्रारूपम् (Credit Framework)**

| पाठ्यक्रमकूटाङ्कः (Course Code) | पाठ्यक्रमशीर्षकम् (Course Title) | पाठ्यक्रमस्य श्रेयोऽङ्कविभाजनम् (Credit Distribution of the Course) | | | श्रेयोऽङ्काः (Credits) |
|---|---|---|---|---|---|
| | | व्याख्यानम् (Lecture) | अनुशिक्षणम् (Tutorial) | प्रशिक्षणम्/अभ्यासः (Practical/Practice) | |
| प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 2.1 | बृहद्देवालये उपमन्दिराणि | 04 | 0 | 0 | 04 |

**पाठ्यक्रमविवरणम् (Details of Course)**

**अन्वितिः १. देवतापरिवारपरिचयः।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- शिवपरिवारः।
- विष्णुपरिवारः।
- ब्रह्मादिदेवानां परिवाराः, वाहनानि च।
- ध्वजाः।

**अन्वितिः२. पञ्चायतनपरिचयः।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- पञ्चायतनस्य अवधारणा।

- गणेशादिपञ्चायतनव्यवस्था।
- देवालयनिर्माणयोजनायां पञ्चायतनशैली।

**अन्वितिः ३. भक्तबेरविधानम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- भक्त-बेरलक्षणम्।
- गरुडस्तम्भः।
- नन्दीमण्डपम्।
- हनूमतः मन्दिरम्।
- भक्तप्रतिमामण्डपादीनां स्थापनम्।

**अन्वितिः ४. देवालयपरिसरे उपमन्दिरव्यवस्था।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- नवग्रहगणदेवताः।
- योगिनी-भैरवादीनाम् उपमन्दिराणि।
- आञ्जनेय-हयग्रीवादीनाम् उपमन्दिराणि।
- वाहनमण्डपम्।
- उपमन्दिराणां वैशिष्ट्यम्।
- सम्मर्दप्रबन्धने चिह्नबोधे च उपमन्दिराणां भूमिका।

**निर्धारिताः ग्रन्थाः (Essential/Recommended Readings/Texts)**

1. जुगनू, श्रीकृष्ण, *विश्वकर्मवास्तुशास्त्र*, दिल्ली : परिमल पब्लिकेशन।
2. पाण्डेय, शैलजा (टीकाकार), *मयमत*, वाराणसी : चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन।
3. Haware, Suresh, Dr., *Temple Management*, New Delhi : Prabhat Prakashan Pvt. Ltd.

**सहायकाः ग्रन्थाः (Additional Readings)**

1. जुगनू, श्रीकृष्ण, डॉ. (सम्पादन), *देवतामूर्तिप्रकरण*, नई दिल्ली : न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन।
2. सिन्हा, कमलेश, श्रीमती, चन्द्र, दिनेश, डॉ., (1990), *भारतीय प्रतिमा विज्ञान*, नई दिल्ली : अयन प्रकाशन।
3. सूर्यकान्त, डॉ., (2006), *वैदिक देवशास्त्र*, नई दिल्ली : मेहरचन्द लछमनदास पब्लिकेशंस।
4. Durai Swamy, Deepa, Dr., *Temple Management in the Agamas*, INDICA.

**काठिन्यस्तरः 200-299**

**श्रेयोऽङ्काः - 4**
**होराः - 60**

**प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 2.2: विविधधार्मिकसम्प्रदायानां परिचयः**

**पाठ्यक्रमस्य उद्देश्यानि (Course Objectives)**

1. सम्प्रदायनिर्वचनानां तद्भेदानाञ्च ज्ञानप्रदानम्।
2. शैवसम्प्रदायानां परिज्ञानम्।
3. वैष्णवसम्प्रदायानां परिज्ञानम्।
4. शाक्तादिसम्प्रदायानां परिज्ञानम्।

**अधिगमस्य परिणामाः (Learning Outcomes):** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः :-

1. भारतदेशस्य वैभवप्रतिपादने सम्प्रदायानां निर्वचनानि वर्णयिष्यन्ति।
2. शैवसम्प्रदायानां परम्परां नियमांश्च वक्तुं शक्ष्यन्ति।
3. वैष्णवसम्प्रदायानां परम्पराया: नियमानां च वर्णनं कर्तुं सिद्धाः भविष्यन्ति।
4. शाक्तादिसम्प्रदायानां परिचयं प्रदातुं समर्थाः भविष्यन्ति।

**श्रेयोऽङ्कप्रारूपम् (Credit Framework)**

| पाठ्यक्रमकूटाङ्कः (Course Code) | पाठ्यक्रमशीर्षकम् (Course Title) | पाठ्यक्रमस्य श्रेयोऽङ्कविभाजनम् (Credit Distribution of the Course) | | | श्रेयोऽङ्काः (Credits) |
|---|---|---|---|---|---|
| | | व्याख्यानम् (Lecture) | अनुशिक्षणम् (Tutorial) | प्रशिक्षणम्/अभ्यासः (Practical/Practice) | |
| प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 2.2 | विविधधार्मिकसम्प्रदायानां परिचयः | 04 | 0 | 0 | 04 |

**पाठ्यक्रमविवरणम् (Details of Course)**

**अन्वितिः १. सम्प्रदायानामावधारणा आगमपरम्परा च।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- सम्प्रदायनिर्वचनानि।
- सम्प्रदायभेदेषु धार्मिक-दार्शनिक-सामाजिकाधाराः।
- वैष्णव-शैव-शाक्तागमानां परिचयः।

**अन्वितिः २. शैवसम्प्रदायानां परम्परा नियमाश्च।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- शाङ्करसम्प्रदायः।
- पाशुपतसम्प्रदायः।

- काश्मीरशैवसम्प्रदायः।
- वीरशैवसम्प्रदायः।
- लकुलीशसम्प्रदायः।

**अन्वितिः ३. वैष्णवसम्प्रदायानां परम्परा नियमाश्च।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- रामानुजसम्प्रदायः।
- पाञ्चरात्रसम्प्रदायः।
- वैखानससम्प्रदायः।
- निम्बार्कसम्प्रदायः।
- वल्लभसम्प्रदायः।
- राधावल्लभसम्प्रदायः।
- गौडीयसम्प्रदायः।

**अन्वितिः ४. शाक्तादिसम्प्रदायानां परम्परा नियमाश्च।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- शाक्तसम्प्रदायः।
- बङ्गप्रदेशे गुर्जरादौ च शक्त्याराधनपरम्परा।
- गाणपत्यसम्प्रदायः।
- नाथसम्प्रदायः।

**निर्धारिताः ग्रन्थाः (Essential/RecommendedReadings/Texts):**


1. वेदांती, हरिशंकरदास, महन्त (सम्पादन), *चतुः सम्प्रदाय दिग्दर्शन*, जयपुर : हंसा प्रकाशन।
2. रङ्गरामानुजाचार्य, पि. टि. जि., डॉ. (सम्पादन), (2009), *श्रीपरमपुरुषसंहिता*, तिरुपति : नव्यश्री पब्लिकेशंस।


**सहायकाः ग्रन्थाः (Additional Readings)**


1. Temple Management in the Agamas, Dr Deepa Durai Swamy, INDICA

**काठिन्यस्तरः 200-299**

**श्रेयोऽङ्काः - 4**
**होराः - 60**

## प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 2.3: अर्चनाविधानम्

**पाठ्यक्रमस्य उद्देश्यानि (Course Objectives)**

1. मन्दिरेषु प्रचलितानामर्चापद्धतेः ज्ञानप्रदानम्।
2. अभिषेकविधानस्य ज्ञानप्रदानम्।
3. अलङ्कारविधानस्य ज्ञानप्रदानम्।
4. धूपदीपनैवेद्यादीनां पद्धतेः ज्ञानप्रदानम्।

**अधिगमस्य परिणामाः (Learning Outcomes):** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः :-

1. मन्दिरेषु प्रचाल्यमानानाम् अर्चनापद्धतीनां वर्णने समर्थाः भविष्यन्ति।
2. अभिषेकविधीनां निरूपणं कर्तुं शक्ष्यन्ति।
3. शैववैष्णवमन्दिरेषु आलङ्कारिकपद्धतीनां विशेषेण वर्णनं कर्तु शक्ष्यन्ति।
4. धूपदीपनैवेद्यादीनां विधेः निरूपणं करिष्यन्ति।

**श्रेयोऽङ्कप्रारूपम् (Credit Framework)**

| पाठ्यक्रमकूटाङ्कः (Course Code) | पाठ्यक्रमशीर्षकम् (Course Title) | पाठ्यक्रमस्य श्रेयोऽङ्कविभाजनम् (Credit Distribution of the Course) | | | श्रेयोऽङ्काः (Credits) |
|---|---|---|---|---|---|
| | | व्याख्यानम् (Lecture) | अनुशिक्षणम् (Tutorial) | प्रशिक्षणम्/अभ्यासः (Practical/Practice) | |
| प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 2.3 | अर्चनाविधानम् | 04 | 0 | 0 | 04 |

**पाठ्यक्रमविवरणम् (Details of Course)**

**अन्वितिः १. मन्दिरेषु प्रचाल्यमानाः अर्चनापद्धतयः।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- त्रिविधोपचाराः।
- पञ्चोपचाराः।
- दशोपचाराः।
- षोडशोपचाराः।
- एकविंशत्युपचाराः।
- द्वात्रिंशदुपचाराः।
- चतुष्षष्ट्युपचाराः।
- राजोपचाराः।
- मानसोपचारः।
- वैदिक-पौराणिकमन्त्राः।
- सम्प्रदायिकस्तोत्राणि।

**अन्वितिः २. अभिषेकनिरूपणम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- शुद्धोदकाभिषेकः।
- पञ्चामृतादिना स्नपनम्।
- स्नपनभेदाः स्नपनद्रव्याणि च।
- पञ्च-नव-द्वादश-एकविंशति-एकाशीति-अष्टोत्तरशत-सहस्रकलशैरभिषेकविधयः।
- रुद्राभिषेकविधिः।
- वैष्णवादिप्रतिमानाम् अभिषेकविधिः।

**अन्वितिः ३. अलङ्कारविधानम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- ऊर्ध्वपुण्ड्र-तिर्यक्पुण्ड्रादितिलकधारणे प्रकाराः।
- विविधसम्प्रदायेषु तिलकधारणपद्धतयः।
- चन्दन-कुङ्कुमादितिलकसामग्रीणां कथनम्।
- वस्त्रधारणविधयः।
- केशसंवर्धशैलीपद्धतयः।
- बहुविधपुष्पैरलङ्कारनिरूपणकथनम्।

**अन्वितिः ४. धूपदीपनैवेद्यादीनां विधिः।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- अष्टगन्ध-धूप-अमनिया-भोग-प्रसाद-नीराजनादिपारिभाषिकशब्दानां विवरणम्।
- दीपदण्डः दीपसंरचना च।
- नैवेद्यफलादीनां समर्पणविधिः।
- मङ्गला-श्रृङ्गार-भोग-सन्ध्या-शयनादिनीराजनानां भेदाः।
- महाकालभस्म – आरार्तिक्यम्।

**निर्धारिताः ग्रन्थाः (Essential/RecommendedReadings/Texts)**


1. रङ्गरामानुजाचार्य, पि. टि. जि., डॉ. (सम्पादन), (2009), *श्रीपरमपुरुषसंहिता*, तिरुपति : नव्यश्री पब्लिकेशंस।
2. उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान, *पौरोहित्य कर्म प्रशिक्षक*, लखनऊ : उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान।
3. गीताप्रेस, *नित्यकर्मपूजाप्रकाश*, गोरखपुर : गीताप्रेस।
4. द्विवेदः, व्रजवल्लभ, आचार्य श्री, *वैष्णवागमविमर्शः*, वाराणसी : सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालयः।

5. सुब्बय्यशर्मा, पि., *आगमिक शिवार्चनपद्धतिः*, विजयवाडा।

**सहायकाः ग्रन्थाः (Additional Readings)**

1. Temple Management in the Agamas, Dr Deepa Durai Swamy, INDICA

**काठिन्यस्तरः**
**200-299**

**श्रेयोऽङ्काः - 4**
**होराः - 60**

# चतुर्थसत्रार्द्धः (Semester – 4)

**प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 2.4: अर्चकपरिचारकाणां व्यवस्था**

**पाठ्यक्रमस्य उद्देश्यानि (Course Objectives)**

1. अर्चकानां व्यवस्थायाः ज्ञानप्रदानम्।
2. धर्माधिकारिणां प्रबन्धकानाञ्च भूमिकायाः परिज्ञानम्।
3. दर्शननैवेद्यादीनां व्यवस्थापकानां भूमिकायाः ज्ञानप्रदानम्।
4. पाचकादिसर्वविधपरिचारकसुरक्षकादीनां व्यवस्थापनज्ञानप्रदानम्।

**अधिगमस्य परिणामाः (Learning Outcomes):** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः :-

1. भगवन्मन्दिरे अर्चकाणां लक्षणार्हतादिविषयान् प्रतिपादयिष्यन्ति।
2. धर्माधिकारिणाम् अन्येषां प्रबन्धकानां च भूमिकावर्णने समर्थाः भविष्यन्ति।
3. देवालये सर्वविधदर्शननैवेद्यादीनां व्यवस्थायाः विश्लेषणं कर्तुं शक्ष्यन्ति।
4. देवालयस्याभिवृद्धये सर्वविधपरिचारकाणां लक्षण-कर्त्तव्यानि निरूपयिष्यन्ति।
5. अर्चकानां, मन्दिरपरिचारकाणां, पचाकादीनाञ्च कृते सशुल्कं प्रशिक्षणकेन्द्रं प्रारब्धुं समर्थाः भविष्यन्ति।
6. देवताभेदेन पूजनपद्धतिभेदात् तत्प्रशिक्षणकार्यशालानां समायोजनार्थं सिद्धाः भविष्यन्ति।

**श्रेयोऽङ्कप्रारूपम् (Credit Framework)**

| पाठ्यक्रमकूटाङ्कः (Course Code) | पाठ्यक्रमशीर्षकम् (Course Title) | पाठ्यक्रमस्य श्रेयोऽङ्कविभाजनम् (Credit Distribution of the Course) | | | श्रेयोऽङ्काः (Credits) |
|---|---|---|---|---|---|
| | | व्याख्यानम् (Lecture) | अनुशिक्षणम् (Tutorial) | प्रशिक्षणम्/अभ्यासः (Practical/Practice) | |
| प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 2.4 | अर्चकपरिचारकाणां व्यवस्था | 04 | 0 | 0 | 04 |

**पाठ्यक्रमविवरणम् (Details of Course)**

**अन्वितिः १. अर्चकलक्षणं कर्माणि च।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- अर्चकस्य लक्षणानि।
- अर्चकार्हता।
- अर्चकस्य कर्त्तव्यं महत्त्वञ्च।

**अन्वितिः २. प्रबन्धकलक्षणानि, कर्त्तव्यानि च।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- स्थानाचार्यलक्षणानि।
- मुख्यप्रबन्धककोशाधिकारिणां कर्त्तव्यविधयः।
- सुप्रबन्धने भगवदुपचाराणां ज्ञानम्।

**अन्वितिः ३. पाचकादीनां लक्षणानि नैवेद्यव्यवस्था च।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- पाचकादीनां लक्षणानि।
- भगवत्तीर्थप्रसादादीनां महिमा।
- नैवेद्यनिर्माणे शुद्धाशुद्धविचारः।

**अन्वितिः ४. परिचारकलक्षणानि कर्त्तव्यानि च।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- मालाकार-वादक-वेत्रहस्त-गोपाल-स्थानसंशोधकादिसर्वविधपरिचारकानां नियोजनम्।
- परिचारकलक्षणानि।
- परिचारकस्यार्हता।
- निर्माणे उत्सवादौ च सेवाकार्यस्य माहात्म्यम्।

**निर्धारिताः ग्रन्थाः (Essential/RecommendedReadings/Texts)**


1. राय, रामकुमार, (1985), *नारद पंचरात्र*, वाराणसी : प्राच्य प्रकाशन।
2. शर्मा, पं.शिवदत्त, (1995), *आह्निककर्म्म सूत्रावली*, पुणे : श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेस।
3. उपाध्याय, डॉ. रामराज, (2004), *मनोभिलषितव्रतानुवर्णनम्*, मायापुरी : मान्यता प्रकाशन।
4. रङ्गरामानुजाचार्य, डॉ. पि. टि. जि., (सम्पादक), (2009), *श्रीपरमपुरुषसंहिता*, तिरुपति : नव्यश्री पब्लिकेशंस।


**सहायकाः ग्रन्थाः (Additional Readings)**


1. मिश्र, शिवशंकर, डॉ., (2018), *भारतीय चिन्तन परम्परा में धर्म*, दिल्ली : ईस्टर्न बुक लिंकर्स।

| काठिन्यस्तरः 200-299 | श्रेयोऽङ्काः - 4 होराः - 60 |
|---|---|

**प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 2.5: ज्यौतिषशास्त्रपरिचयः**

**पाठ्यक्रमस्य उद्देश्यानि (Course Objectives)**

1. ज्यौतिषशास्त्रस्य ज्ञानप्रदानम्।
2. फलितज्यौतिषविवेचनम्।
3. शुभाशुभमुहूर्तनिरूपणम्।

**अधिगमस्य परिणामाः (Learning Outcomes):** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः :-

1. ज्यौतिषशास्त्रस्य स्वरूपं प्रतिपादयितुं शक्ष्यन्ति।
2. राशि-ग्रहादीनां परिचयं वक्तुं शक्ष्यन्ति।
3. शुभाशुभमुहूर्तविचारान् वर्णयितुं समर्थाः भविष्यन्ति।
4. मुहूर्तशास्त्रे नक्षत्रविचारं विधाय तत्प्रतिपादने समर्थाः भविष्यन्ति।

**श्रेयोऽङ्कप्रारूपम् (Credit Framework)**

| पाठ्यक्रमकूटाङ्कः (Course Code) | पाठ्यक्रमशीर्षकम् (Course Title) | पाठ्यक्रमस्य श्रेयोऽङ्कविभाजनम् (Credit Distribution of the Course) | | | श्रेयोऽङ्काः (Credits) |
|---|---|---|---|---|---|
| | | व्याख्यानम् (Lecture) | अनुशिक्षणम् (Tutorial) | प्रशिक्षणम्/अभ्यासः (Practical/Practice) | |
| प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 2.5 | ज्यौतिषशास्त्रपरिचयः | 04 | 0 | 0 | 04 |

**पाठ्यक्रमविवरणम् (Details of Course)**

**अन्वितिः १. ज्यौतिषशास्त्रस्य परिचयः स्वरूपं क्षेत्राणि च।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- ज्योतिषशब्दस्य व्युत्पत्तिः परिभाषा च।
- त्रिस्कन्धभेदाः (सिद्धान्तः, संहिता, होरा)
- पञ्चाङ्गपरिचयः (तिथिः, वारः, नक्षत्रं, योगः, करणम्)

**अन्वितिः २. फलितविवेकः।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- राशीनां विवेचनम्।
- ग्रहाणां परिचयः।
- भावफलविवेचनम्।

**अन्वितिः ३. मुहूर्तविवेकः।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- तिथिस्वामी, नन्दादिसञ्ज्ञा।
- सिद्धियोगाः।
- आनन्दादियोगाः।
- रवियोगः।
- शुभकार्येषु वर्ज्यकालः।
- होलिकाष्टकः।
- भद्राविचारः।
- गुरुशुक्रास्ते वर्जितकार्याणि।

**अन्वितिः ४. मुहूर्तशास्त्रे नक्षत्रविचारः।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- नक्षत्रस्वामी।
- ध्रुवादिसञ्ज्ञा।
- नववस्त्रधारणविचारः अन्धादिसञ्ज्ञा।
- लग्नशुद्धिः।
- होमाहुतिविचारः अग्निवासश्च।

**निर्धारिताः ग्रन्थाः (Essential/RecommendedReadings/Texts):**


1. शास्त्री, कपिलेश्वर (टीकाकार), *जातकपारिजातः* (वैद्यनाथ), वाराणसी : चौखम्बा प्रकाशन।
2. पाण्डेय, कमलाकान्त (टीकाकार), *लघुजातकम्* (वराहमिहिरः), वाराणसी : चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन।
3. जोशी, केदारदत्त (टीकाकार), *मुहूर्तचिन्तामणिः* (श्रीरामाचार्यः), दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन।
4. मिश्र, डॉ.सुरेशचन्द्र, (टीकाकार), *मुहूर्तचिन्तामणिः* (श्रीरामाचार्यः), दिल्ली : रंजन पब्लिकेशन्स।


**सहायकाः ग्रन्थाः (Additional Readings)**


1. शर्मा, डॉ.शुभम्, कुमार, डॉ. विजय, (2020), *मुहूर्तशास्त्र*, उज्जैन : महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय।

| काठिन्यस्तरः 200-299 | श्रेयोऽङ्काः - 4 होराः - 60 |
|---|---|

**प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 2.6: मन्दिरेषु पर्वनिर्वाहः**

**पाठ्यक्रमस्य उद्देश्यानि (Course Objectives)**

1. धर्मशास्त्रस्य ज्ञानप्रदानम्।
2. पर्वदिनानां निर्वहणे धर्मशास्त्रोक्तरीत्या तिथिनिर्णयस्य ज्ञानप्रदानम्।
3. देवालयीयानां मुख्यव्रतानां परिज्ञानम्।
4. प्रमुखव्रतपर्वोत्सवानां निर्णयस्य ज्ञानप्रदानम्।

**अधिगमस्य परिणामाः (Learning Outcomes):** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः :-

1. धर्मशास्त्रपरिचयं वक्तुं समर्थाः भविष्यन्ति।
2. पर्वदिनानां निर्वहणे धर्मशास्त्रोक्तरीत्या तिथिनिर्णये प्रमुखसिद्धान्तान् वर्णयिष्यन्ति।
3. देवालयीयानि मुख्यव्रतानि निरूपयिष्यन्ति।
4. प्रमुखव्रतपर्वोत्सवानां निर्णयविश्लेषणं कर्तुं समर्थाः भविष्यन्ति।

**श्रेयोऽङ्कप्रारूपम् (Credit Framework)**

| पाठ्यक्रमकूटाङ्कः (Course Code) | पाठ्यक्रमशीर्षकम् (Course Title) | पाठ्यक्रमस्य श्रेयोऽङ्कविभाजनम् (Credit Distribution of the Course) | | | श्रेयोऽङ्काः (Credits) |
|---|---|---|---|---|---|
| | | व्याख्यानम् (Lecture) | अनुशिक्षणम् (Tutorial) | प्रशिक्षणम्/अभ्यासः (Practical/Practice) | |
| प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 2.6 | मन्दिरेषु पर्वनिर्वाहः | 04 | 0 | 0 | 04 |

**पाठ्यक्रमविवरणम् (Details of Course)**

**अन्वितिः १. धर्मशास्त्रपरिचयः। श्रेयोऽङ्कः १**

- धर्मस्यावधारणा।
- वेद-पुराण-धर्मशास्त्राणां सामान्यपरिचयः।
- मनुस्मृति-याज्ञवल्क्यस्मृति-पराशरस्मृत्यादीनां सामान्यपरिचयः।
- स्त्रीधर्माः।
- पञ्चमहायज्ञानां निरुपणम्।
- पुरुषार्थचतुष्टयपरिचयः।

**अन्वितिः २. तिथिनिर्णयः।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- तिथिनिर्णये प्रमुखसिद्धान्ताः।
- विशिष्टतिथिपर्वनिर्णयः।
- सङ्क्रान्तिविचारः पुण्यकालश्च।
- ग्रहणवेधादिविचारः।

**अन्वितिः ३. प्रमुखव्रतानां परिचयः।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- मासानुसारव्रतानां माहात्म्यम्।
- एकादशीव्रतम्।
- सङ्कष्टीव्रतम्।
- प्रदोषव्रतम्।
- श्रावणादिमासमाहात्म्यानां सङ्क्षिप्तपरिचयः।

**अन्वितिः ४. प्रमुखव्रतपर्वणां निर्णयः।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- नवरात्रिव्रतं, रामनवमी, अक्षयतृतीया, गङ्गादशहरा, वटसावित्रीव्रतं, रथयात्रा च।
- देवशयनं, नागपञ्चमी, रक्षाबन्धनं, श्रीकृष्णजन्माष्टमी, हरितालिका, गणेशजन्मोत्सवश्च।
- जीवित्पुत्रिकाव्रतं, महाष्टमी, महानवमी, विजयादशमी, शतचण्डीविधानं, दीपावल्युत्सवश्च।
- अन्नकूटोत्सवः, गोवर्धनपूजा, यमद्वितीया, देवप्रबोधिनी, कालाष्टमी, हनुमज्जयन्ती, छठपूजा च।
- वसन्तपञ्चमी, महाशिवरात्रिः, होलिकापर्व, सूर्यषष्ठीव्रताचारादयः।

**निर्धारिताः ग्रन्थाः (Essential/RecommendedReadings/Texts)**


1. पाण्डेय, रामचंद्र, प्रो. (व्याख्या), *ज्योतिर्विदाभरणम्* (कालिदासः), वाराणसी : मोतीलाल बनारसीदास।
2. मिश्र, ज्वालाप्रसाद, पं. (टीकाकार), *निर्णयसिन्धुः* (कमलाकरभट्टः), मुंबई : खेमराज श्रीकृष्णदास।
3. शर्मा, विकास, डॉ., *तिथि निर्णय के प्रमुख सिद्धांत एवं विशिष्ट तिथि पर्व निर्णय*, जयपुर : हंसा प्रकाशन।
4. उपाध्याय, रामराज, डॉ., (2004), *मनोभिलषितव्रतानुवर्णनम्*, नई दिल्ली : मान्यता प्रकाशन।


**सहायकाः ग्रन्थाः (Additional Readings)**


1. शर्मा, माधवाचार्य, पं., (1989), *श्रीव्रतराज*, मुंबई : खेमराज श्रीकृष्णदास।
2. महथा, निवारण, डॉ., (2017), *व्रतकथामृतम्*, दिल्ली : ईस्टर्न बुक लिंकर्स।

# तृतीयवर्षः
# (प्रधानपाठ्यक्रमाः)

**काठिन्यस्तरः**
**300-399**

**श्रेयोऽङ्काः - 4**
**होराः - 60**

**पञ्चमसत्रार्द्धः (Semester - 5)**

**प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 3.1: मन्दिरसम्बद्धानां पुष्करिण्याऽऽरामाणां परिचयः**

**पाठ्यक्रमस्य उद्देश्यानि (Course Objectives)**

1. भारतीयज्ञानपरम्परायां जलतत्त्वचिन्तनम्।
2. नदनदीजलाशयानां ज्ञानप्रदानम्।
3. मन्दिरसम्बद्धपुष्करिणीनां सम्बन्धस्य ज्ञानप्रदानम्।
4. विभिन्नारामाणां परिज्ञानम्।

**अधिगमस्य परिणामाः (Learning Outcomes):** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः :-

1. भारतीयज्ञानपरम्परायां जलतत्त्वचिन्तनविचारान् वक्तुं समर्थाः भविष्यन्ति।
2. जलाशयादीनां प्रकारः तत्संरक्षणविधीनां च निरूपणं कर्तुं शक्ष्यन्ति।
3. मन्दिरजलाशययोः सम्बन्धनिरूपणं करिष्यन्ति।
4. वृक्षारोपणमहत्त्वं वर्णयिष्यन्ति।

**श्रेयोऽङ्कप्रारूपम् (Credit Framework)**

| पाठ्यक्रमकूटाङ्कः (Course Code) | पाठ्यक्रमशीर्षकम् (Course Title) | पाठ्यक्रमस्य श्रेयोऽङ्कविभाजनम् (Credit Distribution of the Course) | | | श्रेयोऽङ्काः (Credits) |
|---|---|---|---|---|---|
| | | व्याख्यानम् (Lecture) | अनुशिक्षणम् (Tutorial) | प्रशिक्षणम्/अभ्यासः (Practical/Practice) | |
| **प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 3.1** | **मन्दिरसम्बद्धानां पुष्करिण्याऽऽरामाणां परिचयः** | **04** | **0** | **0** | **04** |

**पाठ्यक्रमविवरणम् (Details of Course)**

**अन्वितिः १. भारतीयज्ञानपरम्परायां जलतत्त्वचिन्तनम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- वैदिकवाङ्मये जलविचारः।
- इन्द्रसूक्त-पर्जन्यसूक्त-नदीसूक्तादिषु जलचिन्तनम्।
- पुराणेषु जलमहिमा।
- नदनदीनां परिचयः।
- गङ्गा-यमुना-कावेरी-कृष्णा-गोदावरी-ब्रह्मपुत्र-नर्मदा-गण्डक्यादयः पुण्यसरितः।
- जलमङ्गलानुसारं नदीजलस्य गुणधर्माः।

**अन्वितिः २. जलाशयविमर्शः।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- कूप-सर-कुण्ड-तटाक-वाप्यादिप्रकाराः।
- जलाशयनिर्माणस्य संरक्षणस्य च फलम्।
- नीराजनविधौ अर्घ्यदाने अभिषेकविधौ च जलविमर्शः।
- मधुर-क्षार-नादेय-आन्तरिक्षोदक-तटाक-कूपोदकादिना जलस्य गुणधर्माः।

**अन्वितिः ३. मन्दिरजलाशययोः सम्बन्धः।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- काशीविश्वनाथमन्दिरे ज्ञानवापी।
- महाकालमन्दिरे कोटितीर्थम्।
- त्रयम्बकेश्वरपरिसरे ब्रह्मावर्तकुण्डम्।
- मीनाक्षीमन्दिरे कन्यापुष्करिणी।
- तिरुमलायां स्वामिपुष्करिणी।
- श्रीरङ्गे चन्द्रपुष्करिणी।
- काञ्चीपुरे गजेन्द्रपुष्करिणी।
- तिरुनारायणक्षेत्रे ज्ञानपुष्करिणी।
- रामेश्वरमन्दिरे नवविधकूपाः।
- कपिलमन्दिरे बिन्दुसरोवरः।
- गोवर्धनपर्वते मानसीगङ्गा।
- ब्रह्ममन्दिरस्थः पुष्करसरः इत्यादयः।

**अन्वितिः४. आरामविमर्शः।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- वृक्षारोपणमहत्त्वम्।
- उद्याननिर्माणस्य संरक्षणस्य च फलम्।
- मन्दिरपरिसरे पुष्पवाटिका।
- तुलसी-चन्दन-फलोद्यानादीनां धार्मिकव्यावहारिकोपयोगिता।

**निर्धारिताः ग्रन्थाः (Essential/RecommendedReadings/Texts)**

1. *ऋग्वेद*, वाराणसी : चौखम्बा प्रकाशन।
2. *यजुर्वेद*, वाराणसी : चौखम्बा प्रकाशन।
3. *स्कन्दपुराण*, गोरखपुर : गीताप्रेस।
4. *महाभारत*, गोरखपुर : गीताप्रेस।
5. द्विवेदी, शिवप्रसाद, आचार्य (टीकाकार), *विष्णुधर्मोत्तर पुराण*, वाराणसी : चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन।
6. भोजदेव, *चारुचर्या*, उज्जैन : महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ।

**सहायकाः ग्रन्थाः (Additional Readings)**

1. नारदपुराण, गोरखपुर : गीताप्रेस।

| काठिन्यस्तरः 300-399 | श्रेयोऽङ्काः - 4 होराः - 60 |
|---|---|

**प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 3.2: मन्दिरपरिसराणां विकासप्रबन्धनम्**

**पाठ्यक्रमस्य उद्देश्यानि (Course Objectives)**

1. प्राचीनकाले मन्दिरपरिसराणां विकासप्रबन्धनस्य ज्ञानप्रदानम्।
2. मन्दिरपरिसरे पारम्परिकविभिन्नशालानां विवरणम्।
3. देवालये ध्वजस्तम्भादीनां विशेषविवरणम्।
4. यज्ञशालायाः स्वरूपं विभिन्नयज्ञकुण्डानां स्वरूपनिरूपणम्।

**अधिगमस्य परिणामाः (Learning Outcomes):** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः :-

1. प्राचीनकाले मन्दिरपरिसराणां विकासप्रबन्धनं विज्ञाय प्रतिपादयिष्यन्ति।
2. मन्दिरपरिसरे पारम्परिकविभिन्नशालानां विवरणम् प्रदातुं शक्ष्यन्ति।
3. देवालये यागशाला-विविधयागकुण्डानां नामानि तेषां प्रकारांश्च वर्णयितुं समर्थाः भविष्यन्ति।
4. मन्दिरपरिसरसौन्दर्यं व्याख्यास्यन्ति।

**श्रेयोऽङ्कप्रारूपम् (Credit Framework)**

| पाठ्यक्रमकूटाङ्कः (Course Code) | पाठ्यक्रमशीर्षकम् (Course Title) | पाठ्यक्रमस्य श्रेयोऽङ्कविभाजनम् (Credit Distribution of the Course) | | | श्रेयोऽङ्काः (Credits) |
|---|---|---|---|---|---|
| | | व्याख्यानम् (Lecture) | अनुशिक्षणम् (Tutorial) | प्रशिक्षणम्/अभ्यासः (Practical/Practice) | |
| प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 3.2 | मन्दिरपरिसराणां विकासप्रबन्धनम् | 04 | 0 | 0 | 04 |

**पाठ्यक्रमविवरणम् (Details of Course)**

**अन्वितिः १. प्राचीनकाले मन्दिरपरिसराणां विकासः।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- गर्भगृह-विभिन्नमण्डप-परिक्रमापथ-सभाभवन-प्राकार-गोपुर-मार्ग-प्रणाल्यादेः योजना सौन्दर्यविधानञ्च।
- ध्वजपताकादीनां परिचयः महत्त्वञ्च।
- कीर्तिस्तम्भपरिचयः गरुडस्तम्भः दीपस्तम्भाश्च।

**अन्वितिः २. विविधाः पारम्परिकशालाः।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- पाकशाला।
- भोजनशाला।
- विद्याशाला।
- ग्रन्थशाला।
- गोशाला।
- गजशाला।
- अश्वशाला।
- वाहनस्थानम्।

**अन्वितिः ३. यज्ञशालाविधानम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- यज्ञशालामहत्त्वम्।
- यागशालानिर्माणयोजना च।
- कुण्डलक्षणम्।
- सर्वतोभद्रादिमण्डलानि।
- सामान्यहवनविधिः।

**अन्वितिः ४. परिसरसौन्दर्यम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- मन्दिरपरिसरे पुष्पवाटिका, ग्रहवाटिका, नक्षत्रवाटिका च।
- देवालये विद्युद्दीपानां सौन्दर्यम्।
- परिचयफलकानि।
- जलपल्वलप्रबन्धनम्।
- प्रकाशध्वनिप्रदर्शनम् (Light & Sound Show)
- महाकाललोकादेः अवधारणा।

**निर्धारिताः ग्रन्थाः (Essential/RecommendedReadings/Texts)**

1. जुगनू, श्रीकृष्ण, *अपराजितपृच्छा*, दिल्ली : परिमल संस्कृत ग्रंथमाला।
2. जुगनू, श्रीकृष्ण, *विश्वकर्मवास्तुशास्त्र*, दिल्ली : परिमल संस्कृत ग्रंथमाला।
3. सहाय, डॉ. सच्चिदानन्द, *मन्दिर स्थापत्य का इतिहास*, बिहार : हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
4. द्विवेदी, भोजराज, *यज्ञकुण्डमण्डपसिद्धिः*, दिल्ली : डायमण्ड पाकेट बुक्स।
5. कात्यायन, महर्षि अभय, *विश्वकर्मप्रकाश*, (2019), वाराणसी : चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन।

**सहायकाः ग्रन्थाः (Additional Readings)**

1. Swamy, Dr. Deepa Durai, *Temple Management in the Agamas*, INDICA.
2. Haware, Dr. Suresh, *Temple Management*, Prabhat Prakashan Pvt. Ltd

**काठिन्यस्तरः 300-399**

**श्रेयोऽङ्काः - 4**
**होराः - 60**

**षष्ठसत्रार्द्धः (SEMESTER – 6)**

**प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 3.3: पुण्यतीर्थक्षेत्रेषु मन्दिराणां परस्परसमन्वयः**

**पाठ्यक्रमस्य उद्देश्यानि (Course Objectives)**

1. तीर्थक्षेत्राणां ज्ञानप्रदानम्।
2. उत्तरभारतस्य प्रमुखतीर्थानां परिज्ञानम्।
3. पूर्वभारतस्य प्रमुखतीर्थानां परिज्ञानम्।
4. दक्षिणभारतस्य प्रमुखतीर्थानां परिज्ञानम्।
5. पश्चिमभारतस्य प्रमुखतीर्थानां परिज्ञानम्।

**अधिगमस्य परिणामाः (Learning Outcomes):** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः :-

1. भारतदेशस्थसर्वविधतीर्थानां तीर्थक्षेत्रस्य परिभाषा महत्त्वञ्च वक्तुं समर्थाः भविष्यन्ति।
2. उत्तरभारते पूर्वभारते च प्रमुखतीर्थपरिक्षेत्राणि निरूपयियिष्यन्ति।
3. दक्षिणभारतस्य प्रमुखतीर्थाक्षेत्राणां वर्णनं करिष्यन्ति।
4. पश्चिमभारतस्य प्रमुखतीर्थानां विश्लेषणं करिष्यन्ति।

**श्रेयोऽङ्कप्रारूपम् (Credit Framework)**

| पाठ्यक्रमकूटाङ्कः (Course Code) | पाठ्यक्रमशीर्षकम् (Course Title) | पाठ्यक्रमस्य श्रेयोऽङ्कविभाजनम् (Credit Distribution of the Course) | | | श्रेयोऽङ्काः (Credits) |
|---|---|---|---|---|---|
| | | व्याख्यानम् (Lecture) | अनुशिक्षणम् (Tutorial) | प्रशिक्षणम्/अभ्यासः (Practical/Practice) | |
| प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 3.3 | पुण्यतीर्थक्षेत्रेषु मन्दिराणां परस्परसमन्वयः | 04 | 0 | 0 | 04 |

**पाठ्यक्रमविवरणम् (Details of Course)**

**अन्वितिः १. तीर्थविमर्शः ।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- तीर्थक्षेत्रस्य परिभाषा महत्त्वञ्च।
- तीर्थयात्रायाः माहात्म्यम्।
- महाभारते विभिन्नतीर्थक्षेत्रसंसेवनप्रसङ्गः।
- पुराणेषु विभिन्नतीर्थसंक्षेत्रसंसेवनप्रसङ्गः।

**अन्वितिः २. उत्तरभारते पूर्वभारते च प्रमुखतीर्थपरिक्षेत्राणि।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- अयोध्या।
- ब्रजमण्डलम्।

- हरिद्वार-कुरुक्षेत्र-काशी-नैनादेव्यादयः।
- ज्वालादेवी-चिन्तपूर्ण्यादि उत्तरभारतीयतीर्थानि।
- गया-वैद्यनाथ-कोलकाता-त्रिपुरेश्वरी-कामाख्यादयः।
- जगन्नाथपुरीकोणार्कादिपूर्वभारतीयतीर्थानि।

**अन्वितिः३. दक्षिणभारते प्रमुखतीर्थपरिक्षेत्राणि।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- काञ्ची, श्रृङ्गेरी, तिरुमला, भीमशङ्करः, श्रीरङ्गम्, रामेश्वरम्।
- कन्याकुमारी, अनन्तपद्मनाभक्षेत्रं, गुरुवायूर, रजतपीठपुरक्षेत्रम् (Udupi)
- शबरिमलै, सिंहाचलम्, अन्तर्वेदि, भद्राचलम्।
- अहोबिलं, तिरुनारायणपुरादिमन्दिराणि।

**अन्वितिः४. पश्चिमभारते मध्यभारते च प्रमुखतीर्थपरिक्षेत्राणि।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- पुष्करमण्डलं, द्वारिका, प्रभास, मुम्बई।
- नासिकमण्डलादिपश्चिमभारतीयतीर्थानि।
- अवन्तीपरिक्षेत्रम्, ओङ्कारेश्वरं, चित्रकूटम्, मैहर।
- अमरकण्टकादिमध्यभारतीयतीर्थानि।

**निर्धारिताः ग्रन्थाः (Essential/RecommendedReadings/Texts)**

1. *महाभारत*, गोरखपुर : गीताप्रेस।
2. *स्कन्दपुराण*, गोरखपुर : गीताप्रेस।
3. *पद्मपुराण*, गोरखपुर : गीताप्रेस।
4. *श्रीमद्भागवत महापुराण*, गोरखपुर : गीताप्रेस।
5. द्विवेदी, शिवप्रसाद, आचार्य (टीकाकार), *विष्णुधर्मोत्तर पुराण*, वाराणसी : चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन।

**सहायकाः ग्रन्थाः (Additional Readings)**

1. कल्याण, तीर्थाङ्क, गोरखपुर : गीताप्रेस।

# चतुर्थवर्षः
# (प्रधानपाठ्यक्रमाः)

**काठिन्यस्तरः 400-499**

**श्रेयोऽङ्काः - 4**
**होराः - 60**

**सप्तमसत्रार्द्धः (SEMESTER – 7)**

**प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 4.1: चित्रविधानम्**

**पाठ्यक्रमस्य उद्देश्यानि (Course Objectives)**

1. चित्रप्रकारज्ञानप्रदानम्।
2. चित्रप्रतिमामानज्ञानप्रदानम्।
3. चित्रभेदानां ज्ञानप्रदानम्।

**अधिगमस्य परिणामाः (Learning Outcomes):** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः :-

1. अष्टविधचित्रकर्माणि वर्णयिष्यन्ति।
2. चित्रकर्मारम्भे अपिक्षितान् अंशान् व्याख्यास्यन्ति।
3. रूपनिर्माणं स्त्रीपुरुषलक्षणानि च प्रतिपादयिष्यन्ति।
4. चित्रकर्मणि एकादश रसाः, ललितादिदृष्टिविधानं च व्याख्यातुं शक्ष्यन्ति।

**श्रेयोऽङ्कप्रारूपम् (Credit Framework)**

| पाठ्यक्रमकूटाङ्कः (Course Code) | पाठ्यक्रमशीर्षकम् (Course Title) | पाठ्यक्रमस्य श्रेयोऽङ्कविभाजनम् (Credit Distribution of the Course) | | | श्रेयोऽङ्काः (Credits) |
|---|---|---|---|---|---|
| | | व्याख्यानम् (Lecture) | अनुशिक्षणम् (Tutorial) | प्रशिक्षणम्/अभ्यासः (Practical/Practice) | |
| प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 4.1 | चित्रविधानम् | 04 | 0 | 0 | 04 |

**पाठ्यक्रमविवरणम् (Details of Course)**

**अन्वितिः १. चित्रकर्मप्रवेशः।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- अष्टविधचित्रकर्माणि।
- सत्य-वैणिक-नागर-मिश्रचित्रभेदाः।
- चित्रप्रतिमातालनिर्णयः।
- विविधमानप्रमाणानि।
- पत्रजातिकण्टभेदाः जीवसूत्रनिर्णयः।

**अन्वितिः २. चित्रकर्मारम्भः।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- भूमिबन्धः।
- पट्टपत्रवर्तनानिर्णयः।
- लेपकर्म।
- अण्डकालेखनवर्णविधानम्।

**अन्वितिः ३. चित्राभिधानम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- देव-असुर-कुब्ज-मनुष्यादीनां विविधभेदाः।
- रूपनिर्माणं स्त्रीपुरुषलक्षणानि।
- शिव-विष्णु-ब्रह्मा-लक्ष्मी, सरस्वती-पार्वती-दुर्गा-काली-इन्द्रग्न्यादिप्रमुखदेवादीनां चित्रलक्षणम्।

**अन्वितिः ४. चित्रकर्मणि रसादिविधानम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- चित्रकर्मणि एकादश रसाः, ललितादिदृष्टिविधानम्।
- रागचित्राणि।
- चित्रप्रयोगे प्रयोज्याप्रयोज्य विचारः।

**निर्धारिताः ग्रन्थाः (Essential/RecommendedReadings/Texts)**

1. द्विवेदी, शिवप्रसाद, आचार्य (टीकाकार), *विष्णुधर्मोत्तर पुराण*, वाराणसी : चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन।
2. जुगनू, श्रीकृष्ण (टीकाकार), *समरांगणसूत्रधार*, वाराणसी : चौखम्भा संस्कृत सीरीज।
3. जुगनू, श्रीकृष्ण, *अपराजितपृच्छा*, दिल्ली : परिमल संस्कृत ग्रंथमाला।

**सहायकाः ग्रन्थाः (Additional Readings)**

1. *भरतमुनिविरचितं नाट्यशास्त्रम् - षष्ठः अध्यायः, अभिनवभारतीसहितम्*।

**काठिन्यस्तरः 400-499**

**श्रेयोऽङ्काः - 4**
**होराः - 60**

**प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 4.2: धार्मिकसङ्गीतप्रबन्धनम्**

**पाठ्यक्रमस्य उद्देश्यानि (Course Objectives)**

1. सङ्गीतपरम्पराज्ञानप्रदानम्।
2. धार्मिकसङ्गीतभेदज्ञानप्रदानम्।
3. वाद्ययन्त्राणां परिज्ञानम्।
4. सङ्कीर्तनमहिमाज्ञानप्रदानम्।

**अधिगमस्य परिणामाः (Learning Outcomes):** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः :-

1. सङ्गीतस्य भारतीयपरम्परां वर्णयितुं सिद्धाः भविष्यन्ति।
2. भक्तिमार्गे कीर्तनमाहात्म्यं बोधयितुं समर्थाः भविष्यन्ति।
3. भक्तिमार्गे सङ्गीतयोजनायाः विश्लेषणं कर्तुं शक्ष्यन्ति।
4. विविधवाद्ययन्त्राणां परिचयं वक्तुं शक्ष्यन्ति।

**श्रेयोऽङ्कप्रारूपम् (Credit Framework)**

| पाठ्यक्रमकूटाङ्कः (Course Code) | पाठ्यक्रमशीर्षकम् (Course Title) | पाठ्यक्रमस्य श्रेयोऽङ्कविभाजनम् (Credit Distribution of the Course) | | | श्रेयोऽङ्काः (Credits) |
|---|---|---|---|---|---|
| | | व्याख्यानम् (Lecture) | अनुशिक्षणम् (Tutorial) | प्रशिक्षणम्/अभ्यासः (Practical/Practice) | |
| प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 4.2 | धार्मिकसङ्गीतप्रबन्धनम् | 04 | 0 | 0 | 04 |

**पाठ्यक्रमविवरणम् (Details of Course)**

**अन्वितिः १. भारतीयसङ्गीतपरम्परा।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- वैदिकवाङ्मये सङ्गीतविमर्शः।
- नारदीयशिक्षा-नाट्यशास्त्रादिषु सङ्गीतविमर्शः।
- नटराजशिवः।

**अन्वितिः २. भक्तिमार्गे कीर्तनमाहात्म्यम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- भक्तिसूत्रेषु नामसङ्कीर्तनम्।
- नवधाभक्तिः पौराणिकसाहित्ये कीर्तनसन्दर्भाः।

**अन्वितिः ३. भक्तिमार्गे सङ्गीतयोजना।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- पुष्टिमार्गीयहवेलीसङ्गीतम्।
- विविधपूजोत्सवपदाः।
- भक्तकवेः भजनम्।
- निशाजागरणादिषु सङ्गीतपरम्परा।

**अन्वितिः ४. मन्दिरेषु मङ्गलवाद्यसंयोजनम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- घण्टा-झल्लरी-मृदङ्ग-कांस्यताल-वीणा-मुरली-करताल-घटादि परम्परागतवाद्यानि।
- शहनाई-नौबत-ढोल-हारमोनियम-तबलादिमिश्रभारतीयवाद्यानि।
- ध्वनिविस्तारकयन्त्रस्य प्रयोगः।
- भजनस्य ध्वनिमुद्रणवादनम्।
- ध्वनिप्रदूषणनिरोधने नियन्त्रणप्रणाली।

**निर्धारिताः ग्रन्थाः (Essential/RecommendedReadings/Texts)**

1. *सूरसागर*, खेमराज श्रीकृष्णदास।
2. शिवजी, रघुनाथजी, *श्री वल्लभपुष्टिप्रकाश*, खेमराज श्रीकृष्णदास।
3. जुगनू, श्रीकृष्ण, *अपराजितपृच्छा*, दिल्ली : परिमल संस्कृत ग्रंथमाला।

**सहायकाः ग्रन्थाः (Additional Readings)**

1. रङ्गरामानुजाचार्य, डा. पि.टि.जि. (संपादक), (2009), *श्रीपरमपुरुषसंहिता*, तिरुपति : नव्यश्री पब्लिकेशंस।
2. विजयसारथि, (श्रीभाष्यं), *सङ्गीतमाधवम्*, आन्ध्रप्रदेश : सर्ववैदिक संस्थान।
3. सक्सेना, डॉ. राकेश बाला, *मध्ययुगीन वैष्णव सम्प्रदायों में संगीत*, दिल्ली : श्रीकृष्ण साहित्य सदन।

**काठिन्यस्तरः 400-499**

**श्रेयोऽङ्काः - 4**
**होराः - 60**

**प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 4.3: लोकन्यासव्यवस्था**

**पाठ्यक्रमस्य उद्देश्यानि (Course Objectives)**

1. लोकन्यासस्य ज्ञानप्रदानम्।
2. मन्दिरप्रबन्धने लोकन्यासानां भूमिकायाः ज्ञानप्रदानम्।

**अधिगमस्य परिणामाः (Learning Outcomes):** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः :-

1. भारतीयस्मृत्यादिग्रन्थेषु वर्णितन्यासप्रबन्धनस्य न्यासनियमानाञ्च वर्णने समर्थाः भविष्यन्ति।
2. न्यासस्थापनविधीः वर्णयिष्यन्ति।
3. न्याससम्पादने विविधव्यवस्थाः (आय-व्यय-दान-वेतन-सामग्रीसङ्ग्रहणादि) निरूपयिष्यन्ति।
4. व्रतपर्वादिकाले आवास-परिवहन-मार्गनिर्देशनादिव्यवस्थानां पालनं निर्देशनं च कर्तुं समर्थाः भविष्यन्ति।

**श्रेयोऽङ्कप्रारूपम् (Credit Framework)**

| पाठ्यक्रमकूटाङ्कः (Course Code) | पाठ्यक्रमशीर्षकम् (Course Title) | पाठ्यक्रमस्य श्रेयोऽङ्कविभाजनम् (Credit Distribution of the Course) | | | श्रेयोऽङ्काः (Credits) |
|---|---|---|---|---|---|
| | | व्याख्यानम् (Lecture) | अनुशिक्षणम् (Tutorial) | प्रशिक्षणम्/अभ्यासः (Practical/Practice) | |
| प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 4.3 | लोकन्यासव्यवस्था | 04 | 0 | 0 | 04 |

**पाठ्यक्रमविवरणम् (Details of Course)**

**अन्वितिः १. प्राचीनभारतीयन्यासव्यवस्था। श्रेयोऽङ्कः १**

- स्मृतिग्रन्थेषु अर्थशास्त्रादिराजनयग्रन्थेषु न्यासव्यवस्थायाः मूलम्।
- न्याससम्पत्त्यादीनां प्रबन्धनम्।
- न्याससम्पत्त्यादीनां विक्रयसम्बन्धिभारतीयनियमाः।

**अन्वितिः २. न्यासरचना (न्यासगठनम्) श्रेयोऽङ्कः १**

- न्यासस्यावधारणा।
- स्थापनाप्रक्रिया।
- न्याससदानाम् अधिकाराः कर्त्तव्यञ्च।

**अन्वितिः ३. सम्पत्तिव्यवस्थापनम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- न्याससम्पत्तिसम्बन्धिशासकीयनियमाः।
- आय-व्ययस्य वित्तीय-आकलन-लेखासम्परीक्षायाः व्यवस्था।
- अधिकोषस्य (बैंक खाता) सञ्चालनम्।
- दान-वेतनादिप्रबन्धनम्।
- दानसामग्रीसङ्ग्रहणस्य सुनियोजिता व्यवस्था।
- अर्चकादेः अंशः वेतनञ्च।

**अन्वितिः ४. पर्वोत्सवप्रबन्धनं सामाजिकदायित्वञ्च।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- पर्वोत्सवेषु शासकीयविभागेन सह समन्वयः।
- सुरक्षाव्यवस्था।
- दर्शनादिव्यवस्था।
- धर्मशाला-चिकित्सालय-पाठशालादीनां प्रबन्धनम्।

**निर्धारिताः ग्रन्थाः (Essential/RecommendedReadings/Texts)**

1. गैरोला, वाचस्पति (टीका), *अर्थशास्त्र*, वाराणसी : चौखम्बा प्रकाशन।
2. जैन, एस के, *लोकन्यास विधि संग्रह*, भोपाल : सुविधा ला हाउस।

**सहायकाः ग्रन्थाः (Additional Readings)**

1. बाबेल, वसन्तीलाल, *राजस्थान लोकन्यास कानून*, जयपुर : यूनिक ट्रेडर्स।

| काठिन्यस्तरः 400-499 | श्रेयोऽङ्काः - 4 होराः - 60 |
|---|---|

**अष्टमसत्रार्द्धः (Semester – 8)**

**प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 4.4 : दर्शनार्थि-सौविध्य-प्रबन्धनम्**

**पाठ्यक्रमस्य उद्देश्यानि (Course Objectives)**

1. आवासपरिवहनसौविध्यज्ञानप्रदानम्।
2. दर्शनसौविध्यज्ञानप्रदानम्।
3. प्रचारसामग्रीवितरणस्य विक्रयस्य च परिज्ञानम्।
4. स्वच्छताचिकित्सादिसौविध्यस्य परिज्ञानम्।

**अधिगमनस्य परिणामाः (Learning Outcomes):** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः :-

1. आवासपरिवहनसौविध्यपरिकल्पने समर्थाः भविष्यन्ति।
2. क्षेत्राधारितविविधपरम्परामनुसृत्य दर्शनव्यवस्थासञ्चालने कुशलाः भविष्यन्ति।
3. तीर्थसम्बन्धिप्रचारादिव्यवस्थायां जालपुटमाध्यमेन कार्यं कर्तुं समर्थाः भविष्यन्ति।
4. औषधकेन्द्रस्य स्वच्छतादिप्रबन्धनविषये विविधविषयान् ज्ञातुं सञ्चालने च समर्थाः भविष्यन्ति।

**श्रेयोऽङ्कप्रारूपम् (Credit Framework)**

| पाठ्यक्रमकूटाङ्कः (Course Code) | पाठ्यक्रमशीर्षकम् (Course Title) | पाठ्यक्रमस्य श्रेयोऽङ्कविभाजनम् (Credit Distribution of the Course) | | | श्रेयोऽङ्काः (Credits) |
|---|---|---|---|---|---|
| | | व्याख्यानम् (Lecture) | अनुशिक्षणम् (Tutorial) | प्रशिक्षणम्/अभ्यासः (Practical/Practice) | |
| प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 4.4 | दर्शनार्थि-सौविध्य-प्रबन्धनम् | 04 | 0 | 0 | 04 |

**पाठ्यक्रमविवरणम् (Details of Course)**

**अन्वितिः १. आवासपरिवहनसौविध्यम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- प्राचीनप्रपाप्रबन्धनं धर्मशालाव्यवस्था च।
- वाहनव्यवस्था वाहनस्थलप्रबन्धनञ्च मार्गनिर्देशनव्यवस्था।
- पर्वतीयक्षेत्रेषु वेसर (टट्टू)-पालकी-पिट्ठू-उड़नखटोलादि परिज्ञानम्।
- (हेलिकॉप्टर) पवनयानस्य सौविध्यम्।
- नदी-सागरतटवर्तीक्षेत्रेषु नौकादिपरिज्ञानम्।
- ऋतु-पर्यावरणादेः अद्यतनसूचना।
- भोजनालयादि परिज्ञानम्।

**अन्वितिः २. दर्शनसौविध्यम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- आभासीयपटले (Online) सूचनासेवा, विशेषपूजा दर्शनपञ्जीयनसौविध्यञ्च।
- पङ्क्तिव्यवस्थापनम्।
- सामान्यमार्गे मार्गावरोधनं (बैरिकेटिंग) मध्ये आसनसौविध्यञ्च।
- पेयजलापूर्तिः।
- उपानहस्थलम्।
- सम्पुट-(लॉकर) सौविध्यम्।
- सूचना (वस्तु-व्यक्ति-अन्यसौविध्यसम्बद्धा)।

**अन्वितिः ३. प्रचारसामग्रीवितरणं विक्रयञ्च।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- आभासीयप्रचारपत्रकम्।
- जालपुटस्य अद्यतनीकरणं (Website Updation) परिचयफलकव्यवस्था।
- साहित्य-पूजादिसामग्रीविक्रयकेन्द्रम्।
- प्रसादनिर्माणतन्त्रम्।
- प्रसादवितरणकेन्द्रम्।
- विशेषभोगार्थं पूर्वपञ्जीयनसौविध्यम्।

**अन्वितिः ४. स्वच्छताचिकित्सादिसौविध्यम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- प्रणालीप्रबन्धनम्।
- स्वच्छताव्यवस्था प्राथमिकचिकित्सासौविध्यम्।
- औषधिकेन्द्रम्।
- निकटतमचिकित्सालये सम्पर्कः।

**निर्धारिताः ग्रन्थाः (Essential/RecommendedReadings/Texts)**

1. Haware, Dr. Suresh, *Temple Management*, Prabhat Prakashan Pvt. Ltd.

**सहायकाः ग्रन्थाः (Additional Readings)**

1. रङ्गरामानुजाचार्य, डा. पि.टि.जि. (संपादक), (2009), *श्रीपरमपुरुषसंहिता*, तिरुपति : नव्यश्री पब्लिकेशंस।
2. Duraiswamy, Dr. Deepa, *Temple Management in the Agamas*, INDICA

| काठिन्यस्तरः 400-499 | श्रेयोऽङ्काः - 4 होराः - 60 |
|---|---|

**प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 4.5: मन्दिरव्यवस्थापने आपत्प्रबन्धनम्**

**पाठ्यक्रमस्य उद्देश्यानि (Course Objectives)**

1. प्राचीनाऽऽपत्प्रबन्धनस्य परिज्ञानम्।
2. प्राकृतिकोत्पातेभ्यः सुरक्षाव्यवस्थायाः परिज्ञानम्।
3. आकस्मिकाऽऽपत्प्रबन्धनज्ञानप्रदानम्।

**अधिगमनस्य परिणामाः (Learning Outcomes):** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः :-

1. अर्थशास्त्रादिषु वर्णितम् आपदां वैदिकं पौराणिकं च प्रबन्धनं प्रतिपादयिष्यन्ति।
2. उत्पातावसरे तेषामुपशमनोपायेषु समर्थाः भविष्यन्ति।
2. अग्न्युत्पातादीनामवसरे तेषां शमने दायित्वं निर्वोढुं सक्षमाः भविष्यन्ति।
3. जनसम्मर्दस्याधिक्ये तेषां प्रबन्धने कार्यं कर्तुं सिद्धाः भविष्यन्ति।
4. आपत्प्रबन्धने प्रशासनस्य साहाय्यं कर्तुं कुशलाः भविष्यन्ति।

**श्रेयोऽङ्कप्रारूपम् (Credit Framework)**

| पाठ्यक्रमकूटाङ्कः (Course Code) | पाठ्यक्रमशीर्षकम् (Course Title) | पाठ्यक्रमस्य श्रेयोऽङ्कविभाजनम् (Credit Distribution of the Course) | | | श्रेयोऽङ्काः (Credits) |
|---|---|---|---|---|---|
| | | व्याख्यानम् (Lecture) | अनुशिक्षणम् (Tutorial) | प्रशिक्षणम्/अभ्यासः (Practical/Practice) | |
| प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 4.5 | मन्दिरव्यवस्थापने आपत्प्रबन्धनम् | 04 | 0 | 0 | 04 |

**पाठ्यक्रमविवरणम् (Details of Course)**

**अन्वितिः १. प्राचीन-आपत्प्रबन्धनम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- वैदिकपौराणिकादिवाङ्मये आपत्प्रबन्धनस्योपायाः।
- अर्थशास्त्रे अग्निजलप्लवादेः सुरक्षोपायाः।
- कुप्ये दुर्गविधाने च सङ्कटकालिकपूर्वप्रबन्धनम्।
- आपदः अनुमानस्य प्राचीनोपायाः।
- उत्पातलक्षणम्।
- प्रतिमा-रथ-ध्वज-यज्ञाग्नि-जलाशयादिविकारेण भविष्ये सङ्कटानुमानम्।
- उत्पातशान्त्योपायाः।

**अन्वितिः २. प्राकृतिकोत्पातेभ्यः सुरक्षा।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- भूकम्परोधीवास्तुयुक्तयः।
- निर्घात-समुद्रीयझञ्झावात-वज्रपात-चक्रवातीयवर्षा-अतिवृष्ट्यादेः पूर्वानुमाने व्यवस्थिततन्त्रम्।
- तडिच्चालकानां व्यवस्था।

**अन्वितिः ३. आग्नेयोत्पातेभ्यः सुरक्षा।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- विद्युद्-दीपक-यज्ञाग्न्यादीनां सततप्रेक्षणम्।
- अग्निशामकयुक्तेः पर्याप्तव्यवस्था।
- जलसङ्ग्रहणव्यवस्था।
- आपत्कालिकनिष्क्रमणव्यवस्था।
- अग्निशामकगणेन (Fire Brigade) सह त्वरितसम्पर्कतन्त्रम्।

**अन्वितिः ४. आकस्मिक-आपत्प्रबन्धनम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- जनसम्मर्दप्रबन्धनम्।
- प्रपलायनस्य (भगदड़) प्रतिरोधिव्यवस्था।
- आपत्तिकाले अपवादनियन्त्रणोपायाः।
- प्राथमिकचिकित्साव्यवस्था।
- विषचिकत्साव्यवस्था।
- आपत्प्रबन्धनगणेन (NDRF, SDRF) सह-त्वरितसम्पर्कतन्त्रम्।
- प्रशासनेन त्वरितसम्पर्कतन्त्रम्।
- कोरोनासदृशातिसङ्क्रामकरोगप्रसारनिरोधने नीतिः तन्त्रञ्च।

**निर्धारिताः ग्रन्थाः (Essential/RecommendedReadings/Texts)**


1. अर्थशास्त्र, टीकाकार, वाचस्पति गैरोला।
2. बृहत्संहिता, वराहमिहिर, टीका श्री अच्युतानन्द झा, वाराणसी : चौखम्बा विद्याभवन।
3. पर्यावरणीय आपदा प्रबन्धन, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।


**सहायकाः ग्रन्थाः (Additional Readings)**


1. रङ्गरामानुजाचार्य, डा. पि.टि.जि. (संपादक), (2009), *श्रीपरमपुरुषसंहिता*, तिरुपति : नव्यश्री पब्लिकेशंस।
2. Duraiswamy, Dr. Deepa, *Temple Management in the Agama-s*, INDICA.
3. Haware, Dr. Suresh, *Temple Management*, Prabhat Prakashan Pvt. Ltd.

# द्वितीयवर्षः
# (गौणपाठ्यक्रमाः)

| काठिन्यस्तरः 200-299 | श्रेयोऽङ्काः - 4 होराः - 60 |
|---|---|

**गौणः पाठ्यक्रमः (Minor) 2.क.1: भारतीयमन्दिरपरम्परापरिचयः**

**पाठ्यक्रमस्य उद्देश्यानि (Course Objectives)**

1. भारतीयमन्दिरसंस्कृतेः सामान्यपरिचयप्रदानम्।
2. भारतीयज्ञानपरम्परायां मन्दिरसंस्कृतेः अवगमनम्।
3. भारतीयधार्मिकाध्यात्मिकपरम्परायां मन्दिराणां स्थानम्।
4. शास्त्रेषु मन्दिरस्य उल्लेखानां सन्दर्भानां ज्ञानप्रदानम्।

**अधिगमस्य परिणामाः (Learning Outcomes):** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः :-

1. मन्दिराणामवधारणां सम्यक्तया वर्णयितुं शक्ष्यन्ति।
2. वेदी-चिति-यज्ञशालादीनां परिचयं निर्माणनियमांश्च वक्तुं सिद्धाः भविष्यन्ति।
3. मन्दिरस्य पौराणिकसन्दर्भान् व्याख्यातुं समर्थाः भविष्यन्ति।
4. मन्दिराणां समाजे कः प्रभावः इति विश्लेषणं कर्तुं समर्थाः भविष्यन्ति।

**श्रेयोऽङ्कप्रारूपम् (Credit Framework)**

| पाठ्यक्रमकूटाङ्कः (Course Code) | पाठ्यक्रमशीर्षकम् (Course Title) | पाठ्यक्रमस्य श्रेयोऽङ्कविभाजनम् (Credit Distribution of the Course) | | | श्रेयोऽङ्काः (Credits) |
|---|---|---|---|---|---|
| | | व्याख्यानम् (Lecture) | अनुशिक्षणम् (Tutorial) | प्रशिक्षणम्/अभ्यासः (Practical/Practice) | |
| गौणः पाठ्यक्रमः (Minor) 2.क.1 | भारतीयमन्दिरपरम्परा परिचयः | 04 | 0 | 0 | 04 |

**पाठ्यक्रमविवरणम् (Details of Course)**

**अन्वितिः १. मन्दिरस्य अवधारणा।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- मन्दिरस्य परिभाषा।
- मन्दिरस्य महत्त्वम्।
- मन्दिरस्य वातावरणम्।

**अन्वितिः २. वैदिक्यर्चावास्तु।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- वैदिककाले धार्मिकं वास्तु।
- वेदी-चिति-यज्ञशालादीनां परिचयः निर्माणनियमाश्च।

- वैदिकार्चा वास्तुनि मन्दिरविकाससूत्राणि।

**अन्वितिः ३. मन्दिरस्य पौराणिकसन्दर्भाः।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- मत्स्य-अग्नि-पद्म-स्कन्दपुराणादिषु मन्दिरप्रस्तावः।
- मन्दिरसम्बद्धपौराणिकविषयाणां महत्त्वम्।
- संस्कृतवाङ्मये मन्दिरस्य प्राच्यप्रमाणं वास्तुविन्यासश्च।

**अन्वितिः ४. जनमानसे मन्दिराणां स्थानम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- मन्दिराणां समाजे प्रभावः।
- मन्दिरैः सामाजिकपरिवर्तनम्।
- मन्दिरैः मानवेषु परस्परसद्भावः।

**निर्धारिताः ग्रन्थाः (Essential/Recommended Readings/Texts)**


1. विद्याधर, डॉ., *भारतीय वास्तुशास्त्र का इतिहास*, नई दिल्ली : ईस्टर्न बुक लिंकर्स।
2. सहाय, सच्चिदानन्द, *मन्दिर स्थापत्य का इतिहास*, बिहार : हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
3. गैरोला, वाचस्पति (टीका), *अर्थशास्त्र*, वाराणसी : चौखम्बा प्रकाशन।


**सहायकाः ग्रन्थाः (Additional Readings)**


1. सूर्यकान्त, डॉ., (2006), *वैदिक देवशास्त्र*, नई दिल्ली : मेहरचन्द लछमनदास पब्लिकेशंस।
2. उपाध्याय, डॉ. वासुदेव, (2008), *प्राचीन भारतीय स्तूप गुहा एवं मंदिर*, पटना : बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
3. जुगनू, डॉ. श्रीकृष्ण, (2015), *देवालय चन्द्रिका*, दिल्ली : परिमल पब्लिकेशंस।

**काठिन्यस्तरः 200-299**

**श्रेयोऽङ्काः - 4**
**होराः - 60**

**गौणः पाठ्यक्रमः (Minor) 2.क.2: मन्दिरप्रतिमापरिचयः**

**पाठ्यक्रमस्य उद्देश्यानि (Course Objectives)**

1. प्रतिमाभेदस्य ज्ञानप्रदानम्।
2. चलाचलविग्रहाणां स्वरूपस्य अवगमनम्।
3. सकलनिष्कलप्रतिमानां ज्ञानप्रदानम्।
4. उत्सवमूर्तेः महिम्नः वर्णनम्।

**अधिगमस्य परिणामाः (Learning Outcomes): अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः :-**

1. प्रतिमापरिचयं तद्भेदांश्च प्रतिपादयितुं समर्थाः भविष्यन्ति।
2. विविधलिङ्गपरिचयप्रदाने समर्थाः भविष्यन्ति।
3. शिवस्य नटराज-लकुलीश-भिक्षाटनादिप्रतिमानां वर्णने सिद्धाः भविष्यन्ति।
4. देवीप्रतिमास्वरूपं वर्णयितुं शक्ष्यन्ति।

**श्रेयोऽङ्कप्रारूपम् (Credit Framework)**

| पाठ्यक्रमकूटाङ्कः (Course Code) | पाठ्यक्रमशीर्षकम् (Course Title) | पाठ्यक्रमस्य श्रेयोऽङ्कविभाजनम् (Credit Distribution of the Course) | | | श्रेयोऽङ्काः (Credits) |
|---|---|---|---|---|---|
| | | व्याख्यानम् (Lecture) | अनुशिक्षणम् (Tutorial) | प्रशिक्षणम्/अभ्यासः (Practical/Practice) | |
| गौणः पाठ्यक्रमः (Minor) 2.क.2 | मन्दिरप्रतिमापरिचयः | 04 | 0 | 0 | 04 |

**पाठ्यक्रमविवरणम् (Details of Course)**

**अन्वितिः १. प्रतिमापरिचयः भेदाश्च।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- प्रतिमा-मूर्त्यादयः पारिभाषिकशब्दस्य परिचयः।
- चलाचलविग्रहाः।
- लिङ्गं बेरञ्च।
- सकलनिष्कलप्रतिमा।
- सम्पूर्ण-आवक्ष-मुखारविन्दप्रतिमा।
- उत्सवमूर्तिः।

**अन्वितिः २. विविधलिङ्गपरिचयः।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- लिङ्गसंरचना।
- जलहारिकाद्यङ्गानि, मुखलिङ्गम्।

- सहस्रलिङ्गम्।
- ब्राह्मादिलिङ्गानि।
- रत्नज-दारुज-शैलजादिलिङ्गभेदाः।

**अन्वितिः ३. देवप्रतिमापरिचयः।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- शिवस्य नटराज-लकुलीश-भिक्षाटनादिप्रतिमानां परिचयः।
- विष्णोः शयनादिमुद्राः।
- राम-कृष्ण-ब्रह्मा-इन्द्रकुबेरादीनां प्रतिमाः।

**अन्वितिः ४. देवीप्रतिमापरिचयः।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- महालक्ष्मी-महाकाली-सरस्वती-महिषासुरमर्दिनी-दुर्गादेवी-पद्मावतीदेव्यादिप्रतिमानां रूपाणि।

**निर्धारिताः ग्रन्थाः (Essential/RecommendedReadings/Texts)**


1. जुगनू, श्रीकृष्ण, *अपराजितपृच्छा*, दिल्ली : परिमल संस्कृत ग्रंथमाला।
2. पाण्डेय, शैलजा (टीकाकार), *मयमत*, वाराणसी : चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन।
3. डेगेंस, ब्रूनो (टीकाकार), *मयमत*, वाराणसी : मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन।


**सहायकाः ग्रन्थाः (Additional Readings)**


1. जुगनू, डॉ. श्रीकृष्ण (संपादक), *देवतामूर्तिप्रकरणम्*, न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन।
2. सिन्हा, श्रीमती कमलेश, चन्द्र, डॉ. दिनेश, (1990), *भारतीय प्रतिमा विज्ञान*, नई दिल्ली : अयन प्रकाशन।
3. सूर्यकान्त, डॉ., (2006), *वैदिक देवशास्त्र*, नई दिल्ली : मेहरचन्द लछमनदास पब्लिकेशंस।

# तृतीयवर्षः
# (गौणपाठ्यक्रमाः)

| काठिन्यस्तरः 300-399 | श्रेयोऽङ्काः - 4<br>होराः - 60 |
|---|---|

**गौणः पाठ्यक्रमः (Minor) 3.क.1: मन्दिरनिर्माणं जीर्णोद्धारविधानञ्च**

**पाठ्यक्रमस्य उद्देश्यानि (Course Objectives)**

1. भूमेः चयनस्य ज्ञानप्रदानम्।
2. मन्दिरनिर्माणारम्भप्रक्रियायाः ज्ञानप्रदानम्।
2. प्रतिष्ठाविधानस्यावगमनम्।
3. जीर्णोद्धारविधानस्य ज्ञानप्रदानम्।

**अधिगमस्य परिणामाः (Learning Outcomes): अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः :-**

1. मन्दिरनिर्माणावसरे योग्यभूमेः आवश्यकतां, भूमेः भेदांश्च वर्णयितुं शक्ष्यन्ति।
2. देवालयारम्भमुहूर्तः, शिलान्यासविधिः इत्यादिविषयान् सुष्ठु प्रतिपादयिष्यन्ति।
3. प्रतिष्ठानिर्वचनं, प्रतिष्ठागतानां च नैकविषयाणां विश्लेषणं करिष्यन्ति।
4. जीर्णोद्धारशब्दार्थं, मन्दिरे विभिन्नजीर्णद्रव्याणां च स्वरूपं निरूपयिष्यन्ति।

**श्रेयोऽङ्कप्रारूपम् (Credit Framework)**

| पाठ्यक्रमकूटाङ्कः (Course Code) | पाठ्यक्रमशीर्षकम् (Course Title) | पाठ्यक्रमस्य श्रेयोऽङ्कविभाजनम् (Credit Distribution of the Course) | | | श्रेयोऽङ्काः (Credits) |
|---|---|---|---|---|---|
| | | व्याख्यानम् (Lecture) | अनुशिक्षणम् (Tutorial) | प्रशिक्षणम्/अभ्यासः (Practical/Practice) | |
| गौणः पाठ्यक्रमः (Minor) 3.क.1 | मन्दिरनिर्माणं जीर्णोद्धारविधानञ्च | 04 | 0 | 0 | 04 |

**पाठ्यक्रमविवरणम् (Details of Course)**

**अन्वितिः १. भूमिचयनम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- देवालयार्थं प्रशस्तभूमिः।
- भूमिचयनस्य वास्तुशास्त्रीयविधयः।
- ग्रामनगरादिषु देवालयस्थानम्।

**अन्वितिः २. देवालयारम्भः निर्माणञ्च।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- देवालयारम्भमुहूर्तः।
- गर्भविन्यासः।
- शिलान्यासविधिः।

- शल्योद्धारः।
- प्रस्तरदेवालयः।
- गर्भगृहं मण्डपञ्च।
- गोपुरविधानम्।
- इष्टिकालक्षणम्।
- गुहास्थापत्यम्।

**अन्वितिः ३. प्रतिष्ठाविधानम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- प्रतिमास्थापनम्।
- प्रतिष्ठामुहूर्तः।
- प्रतिष्ठाविधिः।

**अन्वितिः ४. जीर्णोद्धारविधानम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- अनुकर्मपरिचयः।
- बालालयस्थापनम्।
- धातुजप्रतिमाजीर्णोद्धारः।
- प्रतिमास्थानपरिवर्तने विधिनिषेधः।

**निर्धारिताः ग्रन्थाः (Essential/RecommendedReadings/Texts)**

1. पाठक, गणेशदत्त (टीकाकार), *विश्वकर्माप्रकाश*, वाराणसी : श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार।
2. श्री वेङ्कटेश्वरवेदविश्वविद्यालयः, *प्रतिष्ठाविधिदर्शनः*, तिरुपतिः।
3. पाण्डेय, शैलजा (टीकाकार), *मयमत*, वाराणसी : चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन।
4. डेगेंस, ब्रूनो (टीकाकार), *मयमत*, वाराणसी : मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन।

**सहायकाः ग्रन्थाः (Additional Readings)**

1. जुगनू, डॉ. श्रीकृष्ण (सम्पादक), (2005), *वास्तु एवं शिलाचयन*, न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन।
2. द्विवेदी, श्री रामनिहोर, *बृहद्वास्तुमाला*, वाराणसी : चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला।
3. जुगनू, डॉ. श्रीकृष्ण (सम्पादक), *देवतामूर्तिप्रकरण*, न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन।
4. रघुनाथाचार्युलु, एस. बी., *क्रियाकैरवचन्द्रिका*, तिरुपतिः : पद्मश्री पब्लिशर्स।

| काठिन्यस्तरः 300-399 | श्रेयोऽङ्काः - 4 होराः - 60 |
|---|---|

**गौणः पाठ्यक्रमः (Minor) 3.क.2: अर्चनापद्धतिपरिचयः**

**पाठ्यक्रमस्य उद्देश्यानि (Course Objectives)**

1. मन्दिरेषु प्रचलितानामर्चापद्धतेः ज्ञानप्रदानम्।
2. अभिषेकविधानस्य ज्ञानप्रदानम्।
3. अलङ्कारविधानस्य ज्ञानप्रदानम्।
4. धूपदीपनैवेद्यादिपद्धतेः ज्ञानप्रदानम्।

**अधिगमस्य परिणामाः (Learning Outcomes): अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः** :-

1. मन्दिरेषु प्रचाल्यमानानाम् अर्चनापद्धतीनां वर्णने समर्थाः भविष्यन्ति।
2. अभिषेकविधीनां निरूपणं कर्तुं शक्ष्यन्ति।
3. शैववैष्णवमन्दिरेषु आलङ्कारिकपद्धतीनां विशेषेण वर्णनं कर्तु शक्ष्यन्ति।
4. धूपदीपनैवेद्यादीनां विधेः निरूपणं करिष्यन्ति।

**श्रेयोऽङ्कप्रारूपम् (Credit Framework)**

| पाठ्यक्रमकूटाङ्कः (Course Code) | पाठ्यक्रमशीर्षकम् (Course Title) | पाठ्यक्रमस्य श्रेयोऽङ्कविभाजनम् (Credit Distribution of the Course) | | | श्रेयोऽङ्काः (Credits) |
|---|---|---|---|---|---|
| | | व्याख्यानम् (Lecture) | अनुशिक्षणम् (Tutorial) | प्रशिक्षणम्/अभ्यासः (Practical/Practice) | |
| गौणः पाठ्यक्रमः (Minor) 3.क.2 | अर्चनापद्धतिपरिचयः | 04 | 0 | 0 | 04 |

**पाठ्यक्रमविवरणम् (Details of Course)**

**अन्वितिः १. मन्दिरेषु प्रचल्यमानाः अर्चनापद्ध**तयः। **श्रेयोऽङ्कः १**

- त्रिविधोपचाराः।
- पञ्चोपचाराः।
- दशोपचाराः।
- षोडशोपचाराः।
- एकविंशत्युपचाराः।

- द्वात्रिंशदुपचाराः।
- चतुष्षष्ट्युपचाराः।
- राजोपचाराः।
- मानसोपचारः।
- वैदिक-पौराणिकमन्त्राः।
- सम्प्रदायिकस्तोत्राणि।

**अन्वितिः २. अभिषेकनिरूपणम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- शुद्धोदकाभिषेकः।
- पञ्चामृतादिना स्नपनम्।
- स्नपनभेदाः स्नपनद्रव्याणि च।
- पञ्च-नव-द्वादश-एकविंशति- एकाशीति-अष्टोत्तरशत-सहस्रकलशैरभिषेकविधिः।
- रुद्राभिषेकविधिः।
- वैष्णवादिप्रतिमानां अभिषेकविधिः।

**अन्वितिः ३. अलङ्कारविधानम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- ऊर्ध्वपुण्ड्र-तिर्यक्पुण्ड्रादितिलकधारणे प्रकाराः।
- विविधसम्प्रदायेषु तिलकधारणपद्धतयः।
- चन्दन-कुङ्कुमादितिलकसामग्रीणां कथनम्।
- वस्त्रधारणविधयः।
- केशसंवर्धनशैल्यः।
- बहुविधपुष्पैरलङ्कारनिरूपणकथनम्।

**अन्वितिः ४. धूपदीपनैवेद्यादीनां विधिः।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- अष्टगन्ध-धूप-अमनिया-भोग-प्रसाद-नीराजनादिपारिभाषिकशब्दानां विवरणम्।
- दीपदण्डः दीपसंरचना च।
- नैवेद्यफलादीनां समर्पणविधिः।

- मङ्गला-शृङ्गार-भोग-सन्ध्या-शयनादिनीराजनानां भेदाः।
- महाकालभस्म आरार्तिक्यम्।

**निर्धारिता: ग्रन्थाः (Essential/RecommendedReadings/Texts)**


1. रङ्गरामानुजाचार्य, डा. पि.टि.जि. (सम्पादक), (2009), *श्रीपरमपुरुषसंहिता*, तिरुपति: नव्यश्री पब्लिकेशंस।
2. *पौरोहित्य कर्म प्रशिक्षक*, उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान।
3. *नित्यकर्मपूजाप्रकाश*, गोरखपुर : गीताप्रेस।
4. व्रजवल्लभद्विवेदि, आचार्य श्री, *वैष्णवागमविमर्शः*, वाराणसी : सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय।
5. सुब्बय्यशर्मा, पि., *आगमिक शिवार्चनपद्धतिः*, विजयवाडा।


**सहायकाः ग्रन्थाः (Additional Readings)**


1. Duraiswamy, Dr. Deepa. *Temple Management in the Agama-s*. INDICA

| काठिन्यस्तरः 300-399 | श्रेयोऽङ्काः - 4 होराः - 60 |
|---|---|

**गौणः पाठ्यक्रमः (Minor) 3.क.3: मन्दिरेषु पर्वपरम्परा**

**पाठ्यक्रमस्य उद्देश्यानि (Course Objectives)**

1. धर्मशास्त्रस्य ज्ञानप्रदानम्।
2. पर्वदिनानां निर्वहणे धर्मशास्त्रोक्तरीत्या तिथिनिर्णयस्य ज्ञानप्रदानम्।
3. देवलयीयानां मुख्यव्रतानां परिज्ञानम्।
4. प्रमुखव्रतपर्वोत्सवानां निर्णयस्य ज्ञानप्रदानम्।

**अधिगमस्य परिणामाः (Learning Outcomes): अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः :-**

1. धर्मशास्त्रपरिचयं वक्तुं समर्थाः भविष्यन्ति।
2. पर्वदिनानां निर्वहणे धर्मशास्त्रोक्तरीत्या तिथिनिर्णये प्रमुखसिद्धान्तान् वर्णयिष्यन्ति।
3. देवालयीयानि मुख्यव्रतानि निरूपयिष्यन्ति।
4. प्रमुखव्रतपर्वोत्सवानां निर्णयविश्लेषणं कर्तुं समर्थाः भविष्यन्ति।

**श्रेयोऽङ्कप्रारूपम् (Credit Framework)**

| पाठ्यक्रमकूटाङ्कः (Course Code) | पाठ्यक्रमशीर्षकम् (Course Title) | पाठ्यक्रमस्य श्रेयोऽङ्कविभाजनम् (Credit Distribution of the Course) | | | श्रेयोऽङ्काः (Credits) |
|---|---|---|---|---|---|
| | | व्याख्यानम् (Lecture) | अनुशिक्षणम् (Tutorial) | प्रशिक्षणम्/अभ्यासः (Practical/Practice) | |
| गौणः पाठ्यक्रमः (Minor) 3.क.3 | मन्दिरेषु पर्वपरम्परा | 04 | 0 | 0 | 04 |

**पाठ्यक्रमविवरणम् (Details of Course)**

**अन्वितिः १. धर्मशास्त्रपरिचयः।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- धर्मस्यावधारणा।
- वेद-पुराण-धर्मशास्त्राणां सामान्यपरिचयः।
- मनुस्मृति-याज्ञवल्क्यस्मृति-पराशरस्मृत्यादीनां सामान्यपरिचयः।
- स्त्रीधर्माः।
- पञ्चमहायज्ञानां निरुपणम्।
- पुरुषार्थचतुष्टयपरिचयः।

**अन्वितिः २. तिथिनिर्णयः।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- तिथिनिर्णये प्रमुखसिद्धान्ताः।
- विशिष्टतिथिपर्वनिर्णयः।
- सङ्क्रान्तिविचारः पुण्यकालश्च।
- ग्रहणवेधादिविचारः।

**अन्वितिः ३. प्रमुखव्रतानां परिचयः।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- मासानुसारव्रतानां माहात्म्यम्।
- एकादशीव्रतम्।
- सङ्कष्टीव्रतम्।
- प्रदोषव्रतम्।
- श्रावणादिमासमाहात्म्यानां सङ्क्षिप्तपरिचयः।

**अन्वितिः ४. प्रमुखव्रतपर्वणां निर्णयः।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- नवरात्रिव्रतम् -रामनवमी-अक्षयतृतीया-गङ्गादशहरा-वटसावित्रीव्रतम्-रथयात्रा।
- देवशयनम्-नागपञ्चमी-रक्षाबन्धनं-श्रीकृष्णजन्माष्टमी-हरितालिका-गणेशजन्मोत्सवः।
- जीवित्पुत्रिकाव्रतम्-महाष्टमी-महानवमी-विजयादशमी-शतचण्डीविधानं-दीपावल्युत्सवः।
- अन्नकूटोत्सव-गोवर्धनपूजा-यमद्वितीया-देवप्रबोधिनी-कालाष्टमी-हनुमज्जयन्ती-छठपूजा-वसन्तपञ्चमी-महाशिवरात्रिः-होलिकापर्वः-सूर्यषष्ठीव्रतादिचाचारः इत्यादयः।

**निर्धारिताः ग्रन्थाः (Essential/RecommendedReadings/Texts)**


1. उपाध्याय, डॉ.रामराज, (2004), *मनोभिलषितव्रतानुवर्णनम्*, नई दिल्ली : मान्यता प्रकाशन।
2. पाण्डेय, प्रो.रामचंद्र, (व्याख्या), *ज्योतिर्विदाभरणम्* (कालिदासः), वाराणसी : मोतीलाल बनारसीदास।
3. मिश्र, पं.ज्वालाप्रसाद, (टीकाकार), *निर्णयसिन्धुः* (कमलाकरभट्टः), मुंबई : खेमराज श्रीकृष्णदास।
4. शर्मा, डॉ.विकास, *तिथि निर्णय के प्रमुख सिद्धांत एवं विशिष्ट तिथि पर्व निर्णय*, जयपुर : हंसा प्रकाशन।


**सहायकाः ग्रन्थाः (Additional Readings)**


1. शर्मा, पं. माधवाचार्य, श्रीव्रतराज, 1989, मुंबई : खेमराज श्रीकृष्णदास।
2. महथा, डॉ. निवारण, (2017), व्रतकथामृतम्, दिल्ली : ईस्टर्न बुक लिंकर्स।


**सहायकाः ग्रन्थाः (Additional Readings)**


1. Duraiswamy. Dr. Deepa. Temple Management in the Agama-s- INDICA.

| काठिन्यस्तरः 300-399 | श्रेयोऽङ्काः - 4<br>होराः - 60 |
|---|---|

**गौणः पाठ्यक्रमः (Minor) 3.क.4: मन्दिरपरिसरविकासप्रबन्धनम्**

**पाठ्यक्रमस्य उद्देश्यानि (Course Objectives)**

1. प्राचीनकाले मन्दिरपरिसराणां विकासप्रबन्धनस्य ज्ञानप्रदानम्।
2. मन्दिरपरिसरे पारम्परिकविभिन्नशालानां विवरणम्।
3. देवालये ध्वजस्तम्भादीनां विशेषविवरणम्।
4. यज्ञशालायाः स्वरूपं विभिन्नयज्ञकुण्डानां स्वरूपनिरूपणम्।

**अधिगमस्य परिणामाः (Learning Outcomes): अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः :-**

1. प्राचीनकाले मन्दिरपरिसराणां विकासप्रबन्धनं विज्ञाय प्रतिपादयिष्यन्ति।
2. मन्दिरपरिसरे पारम्परिकविभिन्नशालानां विवरणम् प्रदातुं शक्ष्यन्ति।
3. देवालये यागशाला-विविधयागकुण्डानां नामानि तेषां प्रकारांश्च वर्णयितुं समर्थाः भविष्यन्ति।
4. मन्दिरपरिसरसौन्दर्यं व्याख्यास्यन्ति।

**श्रेयोऽङ्कप्रारूपम् (Credit Framework)**

| पाठ्यक्रमकूटाङ्कः (Course Code) | पाठ्यक्रमशीर्षकम् (Course Title) | पाठ्यक्रमस्य श्रेयोऽङ्कविभाजनम् (Credit Distribution of the Course) | | | श्रेयोऽङ्काः (Credits) |
|---|---|---|---|---|---|
| | | व्याख्यानम् (Lecture) | अनुशिक्षणम् (Tutorial) | प्रशिक्षणम्/अभ्यासः (Practical/Practice) | |
| गौणः पाठ्यक्रमः (Minor) 3.क.4 | मन्दिरपरिसरविकासप्रबन्धनम् | 04 | 0 | 0 | 04 |

**पाठ्यक्रमविवरणम् (Details of Course)**

**अन्वितिः १. प्राचीनकाले मन्दिरपरिसराणां विकासः। श्रेयोऽङ्कः १**

- गर्भगृह-विभिन्नमण्डप-परिक्रमापथ-सभाभवन-प्राकार-गोपुर-मार्ग-प्रणाल्यादेः योजना सौन्दर्यविधानञ्च।
- ध्वज-पताकादीनां परिचयः महत्त्वञ्च।
- कीर्तिस्तम्भः गरुडस्तम्भः दीपस्तम्भश्च।

**अन्वितिः २. विविधाः पारम्परिकशालाः। श्रेयोऽङ्कः १**

- पाकशाला।
- भोजनशाला।
- विद्याशाला।
- ग्रन्थशाला।

- गोशाला।
- गजशाला।
- अश्वशाला।
- वाहनस्थानम्।

**अन्वितिः३. यज्ञशालाविधानम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- यज्ञशालामहत्त्वम्।
- यागशाला निर्माणयोजना च।
- कुण्डलक्षणम्।
- सर्वतोभद्रादिमण्डलानि।
- सामान्यहवनविधिः।

**अन्वितिः४. परिसरसौन्दर्यम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- मन्दिरपरिसरे पुष्पवाटिका- ग्रहवाटिका- नक्षत्रवाटिकाः।
- देवालये विद्युद्दीपानां सौन्दर्यम्।
- परिचयफलकानि।
- जलपल्वलप्रबन्धनम्।
- प्रकाशध्वनिप्रदर्शनम् (light & sound show)
- महाकाललोकादेः अवधारणा।

**निर्धारिताः ग्रन्थाः (Essential/RecommendedReadings/Texts)**


1. कात्यायन, महर्षि अभय, (2019), *विश्वकर्मप्रकाश*, वाराणसी : चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन।
2. जुगनू, श्रीकृष्ण, *अपराजितपृच्छा*, दिल्ली : परिमल संस्कृत ग्रंथमाला।
3. जुगनू, श्रीकृष्ण, *विश्वकर्मवास्तुशास्त्र*, दिल्ली : परिमल संस्कृत ग्रंथमाला।
4. सहाय, सच्चिदानन्द, *मन्दिर स्थापत्य का इतिहास*, बिहार, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
5. द्विवेदी, भोजराज, *यज्ञकुण्डमण्डपसिद्धिः*, दिल्ली : डायमण्ड पॉकेट बुक्स।


**सहायकाः ग्रन्थाः (Additional Readings)**


1. Duraiswamy, Dr. Deepa, *Temple Management in the Agama-s*, INDICA।
2. Haware, Dr. Suresh, *Temple Management*, Prabhat Prakashan Pvt. Ltd

# चतुर्थवर्षः
# (गौणपाठ्यक्रमाः)

**काठिन्यस्तरः**
**400-499**

**श्रेयोऽङ्काः - 4**
**होराः - 60**

**गौणः पाठ्यक्रमः (Minor) 4.क.1: लोकन्यासव्यवस्था**

**पाठ्यक्रमस्य उद्देश्यानि (Course Objectives)**

1. लोकन्यासस्य ज्ञानप्रदानम्।
2. मन्दिरप्रबन्धने लोकन्यासानां भूमिकायाः ज्ञानप्रदानम्।

**अधिगमस्य परिणामाः (Learning Outcomes): अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः** :-

1. भारतीयस्मृत्यादिग्रन्थेषु वर्णितन्यासप्रबन्धनस्य न्यासनियमानाञ्च वर्णने समर्थाः भविष्यन्ति।
2. न्यासस्थापनविधीः वर्णयिष्यन्ति।
3. न्याससम्पादने विविधव्यवस्थाः (आय-व्यय-दान-वेतन-सामग्रीसङ्ग्रहणादि) निरूपयिष्यन्ति।
4. व्रतपर्वादिकाले आवास-परिवहन-मार्गनिर्देशनादिव्यवस्थानां पालनं निर्देशनं च कर्तुं समर्थाः भविष्यन्ति।

**श्रेयोऽङ्कप्रारूपम् (Credit Framework)**

| पाठ्यक्रमकूटाङ्कः (Course Code) | पाठ्यक्रमशीर्षकम् (Course Title) | पाठ्यक्रमस्य श्रेयोऽङ्कविभाजनम् (Credit Distribution of the Course) | | | श्रेयोऽङ्काः (Credits) |
|---|---|---|---|---|---|
| | | व्याख्यानम् (Lecture) | अनुशिक्षणम् (Tutorial) | प्रशिक्षणम्/अभ्यासः (Practical/Practice) | |
| गौणः पाठ्यक्रमः (Minor) 4.क.1 | लोकन्यासव्यवस्था | 04 | 0 | 0 | 04 |

**पाठ्यक्रमविवरणम् (Details of Course)**

**अन्वितिः १. प्राचीनभारतीयन्यासव्यवस्था। श्रेयोऽङ्कः १**

- स्मृतिग्रन्थेषु अर्थशास्त्रादिराजनयग्रन्थेषु न्यासव्यवस्थायाः मूलम्।
- न्याससम्पत्त्यादीनां प्रबन्धनम्।
- न्याससम्पत्त्यादीनां विक्रयसमबद्धाः भारतीयनियमाः।

**अन्वितिः २. न्यासरचना (न्यासगठनम्)। श्रेयोऽङ्कः १**

- न्यासस्यावधारणा।
- स्थापनाप्रक्रिया।
- न्याससदस्यानाम् अधिकाराः कर्त्तव्यञ्च।

**अन्वितिः ३. सम्पत्तिव्यवस्थापनम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- न्याससम्पत्तिसम्बन्धिशासकीयनियमाः।
- आय-व्यययोः वित्तीय-आकलनलेखासम्परीक्षायाः व्यवस्था।
- अधिकोषस्य (बैंक खाता) सञ्चालनम्।
- दान-वेतनादिप्रबन्धनम्।
- दानसामग्रीसङ्ग्रहणस्य सुनियोजिता व्यवस्था।
- अर्चकादेः अंशं वेतनञ्च।

**अन्वितिः ४. पर्वोत्सवप्रबन्धनं सामाजिकदायित्वञ्च** **श्रेयोऽङ्कः १**

- पर्वोत्सवेषु शासकीयविभागेन सह समन्वयम्।
- सुरक्षाव्यवस्था।
- दर्शनादिव्यवस्था।
- धर्मशाला-चिकित्सालय-पाठशालादीनां प्रबन्धनम्।

**निर्धारिताः ग्रन्थाः (Essential/RecommendedReadings/Texts)**

1. गैरोला, वाचस्पति, टीका, *अर्थशास्त्र*, वाराणसी : चौखम्बा प्रकाशन।
2. जैन, एस. के., *लोकन्यास विधि संग्रह*, भोपाल : सुविधा ला हाउस।

**सहायकाः ग्रन्थाः (Additional Readings)**

1. बाबेल, वसन्तीलाल, राजस्थान लोकन्यास कानून, जयपुर : यूनिक ट्रेडर्स।

| काठिन्यस्तरः 400-499 | श्रेयोऽङ्काः - 4 होराः - 60 |
|---|---|

**गौणः पाठ्यक्रमः (Minor) 4.क.2: दर्शनार्थि-सौविध्यव्यवस्थापनम्**

**पाठ्यक्रमस्य उद्देश्यानि (Course Objectives)**

1. आवास-परिवहनसौविध्यज्ञानप्रदानम्।
2. दर्शनसौविध्यज्ञानप्रदानम्।
3. प्रचारसामग्रीवितरणस्य विक्रयस्य परिज्ञानम्।
4. स्वच्छताचिकित्सादिसौविध्यस्य परिज्ञानम्।

**अधिगमनस्य परिणामाः (Learning Outcomes):** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः :-

1. आवासपरिवहनसौविध्यपरिकल्पने समर्थाः भविष्यन्ति।
2. क्षेत्राधारितविविधपरम्परामनुसृत्य दर्शनव्यवस्थासञ्चालने कुशलाः भविष्यन्ति।
3. तीर्थसम्बन्धिप्रचारादिव्यवस्थायां जालपुटमाध्यमेन कार्यं कर्तुं समर्थाः भविष्यन्ति।
4. औषधकेन्द्रस्य स्वच्छतादिप्रबन्धनविषये विविधविषयान् ज्ञातुं सञ्चालने च समर्थाः भविष्यन्ति।

**श्रेयोऽङ्कप्रारूपम् (Credit Framework)**

| पाठ्यक्रमकूटाङ्कः (Course Code) | पाठ्यक्रमशीर्षकम् (Course Title) | पाठ्यक्रमस्य श्रेयोऽङ्कविभाजनम् (Credit Distribution of the Course) | | | श्रेयोऽङ्काः (Credits) |
|---|---|---|---|---|---|
| | | व्याख्यानम् (Lecture) | अनुशिक्षणम् (Tutorial) | प्रशिक्षणम्/अभ्यासः (Practical/Practice) | |
| प्रधानः पाठ्यक्रमः (Major) 4.क.2 | दर्शनार्थि-सौविध्यव्यवस्थापनम् | 04 | 0 | 0 | 04 |

**पाठ्यक्रमविवरणम् (Details of Course)**

**अन्वितिः १. आवासपरिवहनसौविध्यम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- प्राचीनप्रपाप्रबन्धनं धर्मशालाव्यवस्था च।
- वाहनव्यवस्था वाहनस्थलप्रबन्धनं मार्गनिर्देशनव्यवस्था च।
- पर्वतीयक्षेत्रेषु वेसर (टट्टू)-पालकी-पिट्ठू-उड़नखटोलादिपरिज्ञानम्।
- (हेलिकॉप्टर) पवनयानस्य सौविध्यम्।
- नदी-सागरतटवर्तीक्षेत्रेषु नौकादिपरिज्ञानम्।
- ऋतु-पर्यावरणादेः अद्यतनसूचना।
- भोजनालयादि परिज्ञानम्।

**अन्वितिः २. दर्शनसौविध्यम्।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- आभासीयपटले (Online) सूचनासेवा, विशेषपूजा दर्शनपञ्जीयनसौविध्यञ्च।
- पङ्क्तिव्यवस्थापनम्।
- सामान्यमार्गे मार्गावरोधनम् (बैरिकेटिंग) मध्ये आसनसौविध्यञ्च।
- पेयजलापूर्तिः।
- उपानहस्थलम्।
- सम्पुट-(लॉकर) सौविध्यम्।
- सूचना (वस्तु-व्यक्ति-अन्यसौविध्यसम्बद्धा)।

**अन्वितिः ३. प्रचारसामग्रीवितरणं विक्रयञ्च।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- आभासीयप्रचारपत्रकम्
- जालपुटमद्यतनम् (Website Updation) परिचयफलकव्यवस्था
- साहित्य-पूजादिसामग्रीविक्रयकेन्द्रम्
- प्रसादनिर्माणतन्त्रम्
- प्रसादवितरणकेन्द्रम्
- विशेषभोगार्थं पूर्वपञ्जीयनसौविध्यम्

**अन्वितिः ४. स्वच्छताचिकित्सादि**सौविध्यम्**।** **श्रेयोऽङ्कः १**

- प्रणालीप्रबन्धनम्।
- स्वच्छताव्यवस्था प्राथमिकचिकित्सासौविध्यम्।
- औषधिकेन्द्रम्।
- निकटतमचिकित्सालये सम्पर्कः।

**निर्धारिताः ग्रन्थाः (Essential/RecommendedReadings/Texts)**

1. Haware, Suresh, Dr., *Temple Management*, (Prabhat Prakashan Pvt. Ltd.)

**सहायकाः ग्रन्थाः (Additional Readings)**

2. ङ्गरामानुजाचार्य, डा.पि.टि.जि., (2009), (सम्पादक), *श्रीपरमपुरुषसंहिता*, तिरुपति : नव्यश्री पब्लिकेशंस।
3. Duraiswamy, Dr. Deepa, *Temple Management in the Agamas*, INDICA.